पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2020-2022

ओ३म्

शृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

# आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२३, अंक:-१, जनवरी, सन्-२०२१, सं०-२०७७वि०, दयानंदाब्द १९६, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,१२१; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

साक्षात्कार

## कोई अनुवाद वैदिक मंत्रों का स्थान नहीं ले सकता
## मंत्रों का सम्यक् लाभ लेने के लिये मूल मंत्र ही पढ़ने होंगे

### पिछले २३ वर्षों से लगातार वेद मंत्रों का काव्यानुवाद करने वाले कवि अमृत खरे से संजय माथुर की बात—चीत के संपादित अंश

'विनय-पीयूष' स्तंभ को छपते हुए लगभग २३ साल हो गये और इस स्तंभ के लिए अमृत खरे जी लगातार वेदमंत्रों का काव्यानुवाद करते आ रहे हैं। आज हम उनसे इस महती कार्य की पूरी रचना प्रक्रिया को समझने का प्रयास करेंगे और यह जानेंगे कि इस पूरी सृजन यात्रा में उनके कैसे अनुभव रहे, कैसे किया इतना बड़ा कार्य?

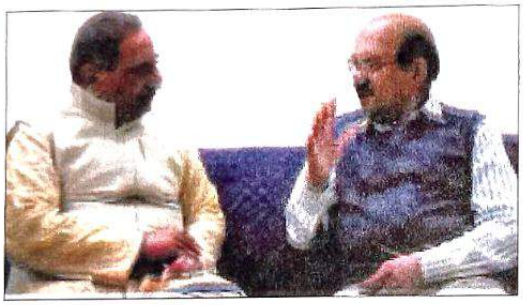

*अमृत जी, सबसे पहले हम यह जानना चाहेंगे कि आपके मन में यह विचार कैसे आया कि आपको वेद मंत्रों का इस तरह काव्यानुवाद करना है?*

धन्यवाद संजय जी, सच बात तो यह है कि ये विचार मेरे मन में आता, उसके पहले ही प्रस्ताव आ गया। हुआ यह कि लखनऊ से जो वैदिक विचार धारा का पत्र प्रकाशित होता है- 'आर्य लोक वार्ता', जब इसके प्रकाश की योजना बन रही थी और उसके स्तंभ निश्चित किए जा रहे थे, उसी समय उसके प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने मुझसे कहा, 'आपको यह कार्य करना है।' तो ये, मेरे मन में नहीं आया और उनके मन में क्यों आया कि ये होना चाहिए या इस कार्य को मुझे ही करना चाहिए, यह तो वही बेहतर बता सकते हैं। शुरुआत यहीं से हो गई। अखबार के पहले अंक में पहला अनुवाद प्रकाशित हुआ। उसके बाद से लगभग २३ साल हो रहे हैं और काव्यानुवाद का ये कार्य सतत जारी है। हर अंक में प्रकाशित होता है। अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है।

*जब यह बात स्पष्ट हो गई कि आपको ही यह स्तंभ तैयार करना है जो आप ने कैसे इसकी तैयारी शुरू की?*

मैं वेदों से बिल्कुल अपरिचित था। मेरे परिवार में पठन-पाठन की परंपरा रही है। पढ़ने वाली पुस्तकों में वेद भी शामिल थे। मेरे पिताजी आर्य समाज से जुड़े हुए थे तो उस नाते यह सुविधा उपलब्ध थी। अब तैयारी वाली समस्या तो मेरे सामने थी, क्योंकि ना तो मैं वैदिक विद्वान था और न ही संस्कृत का विद्वान। तो तैयारी करते समय बहुत डर भी हुआ, संकोच भी पैदा हुआ। हां तो मैंने कर दी, लेकिन बाद में यह सोचना पड़ा कि ये मैंने क्या करने की ठान ली है। वेद तो बहुत बड़े हैं।

सबसे बड़ी समस्या थी कि कैसे शुरुआत होगी? कहां से शुरुआत होगी? हजारों मंत्र हैं, चयन कैसे करेंगे? क्या प्रक्रिया अपनायेंगे? ये सारी समस्या तो थी। उसके लिए शुरुआत में मैंने वेदों को नहीं छुआ। वेदों पर जो बहुत सा कार्य हुआ है, बहुत सी किताबें आई हैं उनको मैंने देखा और कोशिश की कि कोई मंत्र ऐसा जो शुरुआत के लिए बहुत अच्छा हो और संयोग से मुझे ऐसा मंत्र पढ़ने को मिल गया। मैंने उसी से शुरुआत करने की सोची। अब बात ये आई कि हम हिंदी में किस तरह अनुवाद करेंगे, किस छन्द में अनुवाद करेंगे, कैसी भाषा शैली चाहिए, लोगों तक हमें पहुंचाना है, हम खुद कितना स्पष्ट हैं, वह स्पष्टता कैसे आयेगी, तो यह तय करने में कुछ समय लगा। कुछ चीजें मैंने अपने मन में रख ली कि वेदों के मंत्र भी कविताएं हैं। बहुत से मंत्र गद्य में भी हैं लेकिन अधिकांश कविताएं ही हैं। उनमें बड़ी काव्यात्मकता है। लेकिन जब उन मंत्रों की व्याख्याएं वैदिक विद्वान सामने लाते हैं तो उसमें इतनी गूढ़ता होती है कि उसको समझते समय लोगों को दिक्कत होती है। तो मैंने तय किया कि हमें इस रास्ते पर नहीं चलना है। जहां तक संभव हो काव्यात्मक मंत्र का चुनव करना है और सीधा-साधा अनुवाद कर देना है। मैं इसी रास्ते पर चला और शुरुआत मैंने एक बंद के गीत के रूप में की। वह मंत्र प्रकाशित हुआ। लोगों ने उसे सराहा। प्रशंसाएं छपीं, तो मुझे लगा कि हाँ, आगे बढ़ा जा सकता है और उसी तरह से चलते-चलते जब मैं आगे बढ़ता गया तो वहां पहुंचा जहां मुझे वेदों से सीधे मंत्र छाँटने पड़े। उस समय मैंने यह भी निर्णय किया कि सिर्फ फुटकर मंत्रों का अनुवाद न करूं, पूरी-पूरी रचनाएं भी उठा लूँ। वैसा भी मैंने किया और उसको भी लोगों ने पसंद किया।

*आपने इसकी रचना प्रक्रिया के बारे में बताया। अब हम आपसे यह जानना चाहेंगे कि आपको एक काव्यानुवाद करने में कितना समय लगता है?*

देखिए, कुछ मंत्र तो ऐसे हैं कि मैंने पढ़ा, मेरे मन में उसका केन्द्रीय भाव आया। उनके शब्दों को मैंने समझा और सोचा कि अच्छा हिन्दी में इनके लिए मैं कौन से शब्द का प्रयोग कर सकता हूँ और बहुत ही आसानी के साथ, बहुत कम समय में अनुवाद तैयार हो गया। कभी-कभी तो तीन-चार घंटे में ही हम निश्चिंत हो गए कि अब इसमें दोबारा हाथ नहीं लगाना है। लेकिन ऐसे अनुवाद भी हुए जिनमें बहुत समय लगा। सीधी सी बात है मैं स्वयं संतुष्ट नहीं हो रहा था। अब देखिए संजय जी, बात ये है कि जो वैदिक संस्कृत में चीजें हैं, परंपरा से वो चीजें हिन्दी में आ गई हैं, लेकिन बहुत से ऐसे शब्द हैं वैदिक संस्कृत के कि वह हिंदी तक नहीं आए और उनकी जगह पर दूसरे शब्द भी नहीं हैं। तो बड़ी कठिनाई होती थी कि क्या किया जाए? अब जैसे एक क्रिया है वैदिक संस्कृत में 'धी'। आपने बहुत से मंत्रों में पढ़ा होगा, सुना होगा। अब इस क्रिया में क्रिया का करना भी शामिल है और सोचना भी शामिल है। वह 'धी' है। मन-कर्म-वचन जब तीनों एक साथ मिल जाते हैं तो 'धी' की क्रिया बनती है। हिंदी में इसके लिए कोई शब्द नहीं है। मैंने सोचा कि कोई शब्द बन जाए तो वह भी संभव नहीं हुआ। मंत्र के रूप में तो सब 'धी' से परिचित हैं, लेकिन हिंदी में वह कितना स्वीकार हो सकता है, उसका प्रयोग भी बड़ा कठिन था। तो ऐसे बहुत से शब्द आए जो हमें सोचना पड़ा कि क्या किया जाए? तो उसका एक तरीका

(शेष पृष्ठ 3 पर...)

## विनय पीयूष

### आचरण के चरण

**इदमायः प्र वहत यत्किञ्च दुरितं मयि।**
**यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम।।**

(ऋग्वेद 1/23.22)

आचरण के चरण वापस लौट आते!

पाप के हों चरण या फिर पुण्य के हों,
द्रोह के या मैत्री के,
श्राप के या हों कृपा के,
झूठ के या सत्य के हों,
लौट आते सभी फिर-फिर
और हो जाते समाहित,
पुनः तन में, पुनः मन में, प्राण तक में!

आचरण के चरण
तज कर आचरण कब कहीं जाते!
आचरण के चरण फिर-फिर लौट आते!

*काव्यानुवाद : अमृत खरे*

## सम्पादकीय

# धारावाहिक 'उत्तर रामायण' और मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम

'लॉक डाउन' (२६.०३.२० से ०३.०४.२०) की घोषणा के साथ ही जनता के मनोरंजन की सुचारु व्यवस्था सरकार ने की और जो विगत अर्थ शताब्दी में बेहद लोकप्रिय टी.वी. के धारावाहिक थे; उनको पुनः प्रदर्शित करने की व्यवस्था की गई। इसी क्रम में प्रसिद्ध फिल्म निर्माता स्व.रामानन्द सागर द्वारा ३३ वर्षों पूर्व निर्मित, निर्देशित 'रामायण' धारावाहिक के जो ८० एपिसोड तैयार थे, उन्हें पुनः प्रदर्शित किया गया और इस बार भी 'रामायण' धारावाहिक को रिकार्ड तोड़ लोकप्रियता हासिल हुई और करोड़ों की तादाद में देश की जनता ने धारावाहिक की सभी कड़ियों को देखा और सराहा। 'रामायण' धारावाहिक के बाद 'उत्तर रामायण' का भी प्रदर्शन किया गया। 'रामायण' और 'उत्तर रामायण' दोनों ही धारावाहिकों में यद्यपि श्री राम की कथा का वर्णन किया गया है, किन्तु दोनों में आकाश-पाताल का अन्तर है। यह जानते हुए भी कि सीता-परित्याग की कथा को गोस्वामी जी ने 'रामचरितमानस' में कहीं भी स्थान नहीं दिया है और 'वाल्मीकि रामायण' में भी सीता-परित्याग की कथा महर्षि वाल्मीकि की रचना नहीं है, किन्तु किसी अन्य कवि ने इस कथा को बाद में (प्रक्षेप) मिला दिया है; रामानन्द सागर ने सीता-परित्याग की कथा को 'उत्तर रामायण' में चित्रित किया और इस तरह लंका काण्ड तक रामायण ध ारावाहिक में मर्यादा पुरुषोत्तम के जिस मर्यादावादी आदर्श का छायांकन किया था, उस पर पानी फेर दिया।

सबसे दुःखद यह है कि 'रामायण' में श्री राम जन्म से लेकर रावण वध पर्यन्त मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम महाकाव्य के नायक हैं किन्तु 'उत्तर रामायण' में वे खलनायक की भूमिका में आ जाते हैं और दर्शकों की सहानुभूति सीता और लव-कुश पर केन्द्रित हो जाती है। देवी सीता का त्याग और चरित्र आदर्श की चरमावस्था को प्राप्त होता है किन्तु श्री राम का चरित्र और व्यक्तित्व अत्यंत विशृंखलित, खंडित और गरिमाहीन चित्रित किया गया है। यहाँ तक कि अंतिम दृश्य में जहाँ काल (यमराज) आकर अपना परिचय देता है तो श्री राम उसके समक्ष नतमस्तक हो जाते हैं। सदैव दृढ़ प्रतिज्ञ रहने वाले श्रीराम किंकर्तव्यविमूढ़ता की मनोदशा को प्राप्त होकर अपने उस भ्राता- लक्ष्मण को- जिसके बारे में लंका युद्ध के दौरान उन्होंने कहा था-'जो जनतेहुँ वनबन्धु बिछोहू, पिता वचन मन तिहँ नहिं ओहूँ'। उसी भ्राता को अकारण मृत्युदंड देने को तत्पर हो जाते हैं- जबकि लक्ष्मण ने कोई अपराध किया ही नहीं।

'रामायण' धारावाहिक में तथा 'रामचरितमानस' में भी श्रीरा काल को भी चुनौती देते हैं। खर दूषण ने जब राम से उनका परिचय पूछा था तो श्री राम ने कहा था-

हम क्षत्रिय मृगया वन करहीं,
तुम सन खलमृग खोजत फिरहीं।
रिपु बलवंत देखि नहिं डरहीं,
एक बार कालहुं सन लरहीं।।

काल को चुनौती देने वाले श्री राम के व्यक्तित्व को 'उत्तर रामायण' में विखंडित कर दिया, वह भी उन्हीं के भक्तों ने।

फिल्म निर्माताओं के मन में सीता-परित्याग की इस कथा के फिल्मांकन के प्रति आकर्षण के पीछे विगत शताब्दी के पांचवे दशक (१९४५-५०) में स्व.विजय भट्ट द्वारा निर्मित फिल्म 'राम राज्य' की अपार सफलता रही है, जिसमें श्रीराम के पुत्रों वीर लवकुश द्वारा गाये गये एक गीत ने दर्शकों को इतना भावविभोर कर दिया था कि उसे लोग अभी तक भुला नहीं पाये हैं। 'लवकुश' ने 'राम राज्य' फिल्म में अत्यंत ओजस्वी वाणी में जिस गीत का गायन किया था, उसकी प्रारंभिक पंक्तियां हैं-

भारत की एक सन्नारी की हम कथा सुनाते हैं,
उस मिथिला राज दुलारी की हम व्यथा सुनाते हैं।

इस गीत की तर्ज पर हर रामायण पर बनी फिल्म और धारावाहिकों में भी लवकुश के पात्रों ने गीत गायन किया है किन्तु 'रामराज्य' के उपर्युक्त गीत की ख्याति को कोई दुहरा नहीं पाया।

जब रघुनाथ समररिपु जीते, सुर नर मुनि सबके दुख बीते।

मानव जाति के उत्पीड़क असुरों के विनाश और सज्जनों को सुखी करने वाले पुण्य कार्य में भी 'ब्रह्म हत्या' के पाप को खोज निकालने वाला कोई भारतीय संस्कृति, धर्म का घोर विरोधी ही हो सकता है। 'उत्तर रामायण' में ऐसे वैदिक धर्म के शत्रु मौजूद हैं, जिन्होंने श्री राम के मुख में यह संवाद भी डाला है कि- 'रावण का वध करने के कारण मुझ ब्रह्म हत्या का पाप लगा है?' जिस देश की विचारधारा का मुख्य आधार ही यह सिद्धान्त हो-'जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते'। संस्कार रहित आततायी पर भार्यापहर्ता राक्षसराज रावण ब्राह्मण कहाँ से हो गया? आज तक किसी मानस मर्मज्ञ ने इस विडंबनापूर्ण अपमानजनक संवाद के संबन्ध में कोई टिप्पणी तक नहीं की। श्री राम को इस तरह ब्रह्म हत्यारा बताने वाले धारावाहिक भगवान् की नरलीला के नाम पर पुरातन पंथियों का मनोरंजन तो कर सकते हैं किन्तु कोई वैदिक धर्मावलम्बी भारतीय संस्कृति का पुजारी इसे कैसे बर्दाश्त कर सकता है?

[illegible]

## सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-२०४

**युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में दशम समुल्लास का अंश**

### आचार-अनाचार



**योवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद् द्विजः।**
**स साधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिको वेदनिन्दकः॥**

श्रुति वेद और स्मृति धर्मशास्त्र को ही कहते हैं। इनसे सब कर्त्तव्याकर्त्तव्य का निश्चय करना चाहिये। जो कोई मनुष्य वेद और वेदानुकूल आप्तग्रन्थों का अपमान करे उस को श्रेष्ठ लोग जातिबाह्य कर दें। क्योंकि जो वेद की निन्दा करता है वही नास्तिक कहाता है।।8।।

**वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।**
**एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्॥**

इसलिये वेद, स्मृति, सत्पुरुषों का आचार और अपने आत्मा के ज्ञान से अविरुद्ध प्रियाचरण, ये चार धर्म के लक्षण अर्थात् इन्हीं से धर्म लक्षित होता है।।9।।

**अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते।**
**धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः॥**

परन्तु जो द्रव्यों के लोभ और काम अर्थात् विषयसेवा में फसा हुआ नहीं होता उसी को धर्म का ज्ञान होता है। जो धर्म को जानने की इच्छा करें उनके लिये वेद ही परम प्रमाण है।।10।।

**वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम्।**
**कार्य्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च॥**

इसी से सब मनुष्यों को उचित है कि वेदोक्त पुण्यरूप कर्मों से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अपने सन्तानों को उत्पन्न करें। जो इस जन्म वा परजन्म में पवित्र करने वाला है।।11।।

**केशान्तः षोडशे वर्षे ब्राह्मणस्य विधीयते।**
**राजन्यबन्धोर्द्वाविंशे वैश्यस्य द्व्यधिके ततः॥**

ब्राह्मण के सोलहवें, क्षत्रिय के बाईसवें और वैश्य के चौबीसवें वर्ष में केशान्त कर्म और मुण्डन हो जाना चाहिये अर्थात् इस विधि के पश्चात् केवल शिखा को रख के अन्य डाढ़ी मूँछ और शिर के बाल सदा मुंडवाते रहना चाहिये अर्थात् पुनः कभी न रखना और शीतप्रधान देश हो तो कामचार है; चाहै जितने केश रक्खे और जो अति उष्ण देश होतो सब शिखा सहित छेदन करा देना चाहिये क्योंकि शिर के बाल रहने से उष्णता अधिक होती है और उससे बुद्धि कम हो जाती है। डाढ़ी मूँछ रखने से भोजन पान अच्छे प्रकार नहीं होता और उच्छिष्ट भी बालों में रह जाता है।।12।। (मनु.अ.2)

**इन्द्रियाणां विचरतां विषयेष्वपहारिषु।**
**संयमे यत्नमातिष्ठेद्विद्वान् यन्तेव वाजिनाम्॥**

मनुष्य का यही मुख्य आचार है कि जो इन्द्रियां चित्त को हरण करने वाले विषयों में प्रवृत्त कराती हैं उनको रोकने में प्रयत्न करे। जैसे घोड़ों को सारथि रोक कर शुद्ध मार्ग में चलाता है इस प्रकार इनको अपने वश में करके अधर्ममार्ग से हटा के धर्ममार्ग में सदा चलाया करे।।1।।

**इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन दोषमृच्छत्यसंशयम्।**
**सन्नियम्य तु तान्येव ततः सिद्धिं नियच्छति॥**

क्योंकि इन्द्रियों को विषयासक्ति और अधर्म में चलाने से मनुष्य निश्चित दोष को प्राप्त होता है और जब इनको जीत कर धर्म में चलाता है तभी अभीष्ट सिद्धि को प्राप्त होता है।।2।।

(क्रमशः)

## वेदांजलि



# धनार्जन का सत्परामर्श

❑पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू. संसद सदस्य

**परि चिन्मर्तो द्रविणं ममन्यादृतस्य पथा नमसा विवासेत्।**
**उत स्वेन क्रतुना सं वदेत श्रेयांसं दक्षं मनसा जगृभ्यात्।।**

*-ऋग्वेद 10/31/2*

**शब्दार्थ-**

**(मर्तः)** मानव को **(चित्)** उचित है कि **(द्रविणम्)** धन को **(परि)** परिश्रम से **(ममन्यात्)** अर्जित करे **(ऋतस्य)** ऋजुता और सचाई के साथ **(पथः)** मार्ग का, व्यवहार का **(नमसा)** विनयपूर्वक **(आविवासेत्)** आचरण करे। **(उत)** और **(स्वेन)** अपने **(क्रतुना)** पुनीत कर्म से **(संवदेत)** धन को प्रकट करे। **(श्रेयांसम्)** उत्तम कल्याणकारी **(दक्षम्)** व्यवसाय के व्यवहार को **(मनसा)** मनोयोगपूर्वक **(जगृभ्यात्)** ग्रहण करे।

**व्याख्या-**

मंत्र में धनार्जन के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण परामर्श दिये गए हैं-

**पहला**-यह कि धन को परिश्रम से कमाने की सोचो, झटके की कमाई का प्रलोभन मन में मत आने दो।

**दूसरा**-यह कि व्यवहार में सत्य को हाथ से मत जाने दो।

**तीसरा**-यह कि व्यवहार में नम्रता और शालीनता रहे।

**चौथा**-अन्तिम यह कि व्यवसाय को अपनी रुचि के अनुसार चुनो ताकि वह काम तुम्हारा मनोरंजन भी करे, बोझ बनकर उबानेवाला न हो।

संसार में, संसार के ढंग से जीवन यापन के लिए, धन अनिवार्य है। निर्धन व्यक्ति पंखकटे पक्षी के समान है, जो नाममात्र जीवित है; न कहीं जा-आ सकता है और न पेट की आग ही बुझा सकता है। निर्वाह की आवश्यकता के पश्चात् मनुष्य की समाज में सम्मान पूर्वक जीने की इच्छा होती है। पैसे के अभाव में आपके सब सद्गुण निरर्थक से लगते हैं और समुदाय में जो सम्मान मिलना चाहिए वह भी नहीं मिलता।

'देश की बात' नामक पुस्तक में, जो अंग्रेजों के शासनकाल में ज़ब्त थी, एक उल्लेख है कि अकबर ने अपने वजीर को खजाने की विद्यमान आर्थिक स्थिति का आकलन करके ब्यौरा प्रस्तुत करने को कहा। आदेश के पश्चात् तीन महीने बीतने पर भी जब वजीर ने कोई उत्तर न दिया तो बादशाह ने पूछा-"हमने तीन माह हुए आपसे खजाने की स्थिति बताने को कहा था, आपने अभी तक कोई उत्तर नहीं दिया?" इस पर वजीर ने कहा-"बादशाह सलामत! आपने जब से आदेश दिया था, तभी से सात सौ आदमी तराजू-बाट लेकर प्रतिदिन काम के पूरे समय खजाने के सोना-चाँदी तोलने में लगे रहते हैं, अभी तक वे पूरी नाप-तोल नहीं कर पाए और जबतक काम पूरा न हो जावे, मैं आपको कैसे उत्तर दे सकता था?" भारत कितना समृद्ध देश था, इन लेखों से अनुमान करिये! इन इतिवृत्तों से परिणाम निकलता है कि धार्मिक संस्कार और उच्चचरित्र के अभाव में धन भी अभिशाप बन जाता है। वह सुख न देकर दुःख देता है, अतः किसी उर्दू के शायर ने ठीक ही कहा है-

*तंगदस्ती भी बुरी, माल की कसरत भी बुरी।*
*बस इन्हीं बातों से ईमान बदल जाता है।।*

अत्यधिक निर्धनता भी मनुष्य को बुराई की ओर धकेलती है। अर्थशास्त्री कहते हैं, जैसे खाली बोरी खड़ी नहीं हो सकती, जबतक कि उसके पेट में अन्न न भर दिया जावे, उसी प्रकार भूखा व्यक्ति भी ईमानदार नहीं रह सकता। संस्कृत के कवि ने भी ठीक ही कहा है-**"बुभुक्षितः किन्न करोति पापम्"**- भूखा मनुष्य कौन-सा पाप करने को नहीं उतारू हो जाता।

अतः धन को अपेक्षित महत्त्व तो देना ही चाहिए। इसमें दो ही बातों की सावधानी आवश्यक है-पहली अर्जन प्रक्रिया और दूसरी उपभोग की मर्यादा।

धन कमाने के विषय में वेद के इस मंत्र में कहा गया- धन परिश्रम से कमाओ! एक स्थान से लेकर दूसरे स्थान पर जाम करने का नाम कमाना नहीं है। अस्ली कमाई तो देश का उत्पादन बढ़ाने में है। ऐसे व्यवसाय और काम, जिनकी न्यूनता की पूर्ति के लिए देश को परमुखा- पेक्षी होना पड़ता है, देश के बुद्धिमान् नागरिकों को परिश्रम करके उनका उत्पादन करना चाहिए।

मंत्र में दूसरी बात कही, व्यापार में ऋत-स्पष्टता और सत्यनिष्ठा होनी चाहिए। स्पष्ट और सत्याश्रित लेन-देन में समय की बचत और निश्चिन्तता रहती है। ग्राहक को यह भरोसा होना चाहिए कि मुझे चीज ठीक दी जा रही है, ठीक भाव पर दी जा रही है। इसमें मेरे साथ कोई धोखा नहीं हो सकता। विचारके देखिये, ऐसे व्यवहार में कितना बोझ हल्का हो जाता है। आज तो यह हालत है कि घण्टों भाव तय करने में मगज-खपाई करनी पड़ती है, फिर भी यह निश्चिन्तता नहीं होती कि चीज हमें ठीक और उचित मूल्य पर मिल गई है। किसी देश के सुसंस्कृत होने का पैमाना ही यह है कि वहां व्यवहार में सत्य कितना है?

मंत्र की तीसरी बात है व्यवहार में नम्रता और शिष्ट भाषा का प्रयोग होना चाहिए। आज इस व्यवहार में भी बहुत सुधार की आवश्यकता है। किसी वस्तु के गुण-दोष के विषय में दुकानदार से पूछिये। शायद ही आपको कोई ऐसा मिलेगा जो सन्तोषजनक और शान्तभाव से आपको उत्तर दे।

भारत को आदर्श देश बनाने के लिए हमें निर्दिष्ट उपदेशों को अपने व्यवहार में लाना चाहिए।

([illegible])

# दयानन्द चरितामृतम्

-डॉ.गणेश दत्त शर्मा-

(प्रथमः सर्गः)

छन्द ३१-३३

तथाप्यसौ भक्तवरो दृढ़व्रतः,
अशेत नैवामृतबेननन्दनः।
जगद्धि यो बोधयितुं समागतः,
कथं शयीताखिललोकभास्करः।।

तथापि दृढ़व्रत वाला श्रेष्ट भक्त तथा माता अमृतबेन का सुपुत्र वह (मूलशंकर) नहीं सोया। क्योंकि जो संसार को जगाने के लिए आया है, वह अपने प्रकाश से समस्त लोकों को प्रकाशित करने वाला सूर्य स्वयं कैसे सो सकता है?

स कूर्दमानं शिवपिण्डिकाग्रतः,
प्रखादमानं च तथा विना भयम्।
गिरीशनैवेद्यपदार्थविस्तरम्,
सविस्मयं तत्र ददर्श मूषकम्।।

उसने शिवपिण्डी के आगे कूदते हुए और निर्भय होकर शिवजी को नैवेद्य के रूप में समर्पित किए गए पदार्थों को खाते हुए चूहे को आश्चर्यचकित होकर देखा।

अहो महाश्चर्यमसौ जगत्पिता,
त्रिशूलधारी च तथापि निष्क्रियः।
स मूषकाक्रान्ततनुस्त्रिलोचनः,
जडेव किंचिन्न विचेष्टते मनाक्।।

अहा ! आश्चर्य है कि यह (शिव) जगत् का पिता व त्रिशूलधारी होते हुए भी निष्क्रिय है। यह त्रिनेत्रधारी अपने शरीर पर चूहे का आक्रमण होने पर भी जड़ की भाँति तनिक भी कोई चेष्टा तक नहीं कर रहा है।

*('दयानन्द चरितामृतम्' से साभार, क्रमशः)*

*-साहिबाबाद, गाजियाबाद-२०१००५*

(पृष्ठ 1 का शेष...)

**कोई अनुवाद.....**

ये होता कि हमने वहां पर अनुवाद की भाषा व्याख्यात्मक कर दी। शब्द की जगह पर शब्द ना लेकर वाक्य ले लिया, उदाहरण ले लीजिए। इस तरह से वहां अनुवाद शाब्दिक अनुवाद नहीं रह गया। वह भावात्मक अनुवाद हो गया। अक्सर लोग पूछते भी थे कि आपका यह अनुवाद भावात्मक है या यथावत है तो यह मिश्रण हुआ और यह एक मजबूरी भी थी। तो यह करना पड़ता है। तो इस तरह से यह कठिनाइयां जहां पर आयीं वहां पर ठहरना पड़ा। मैंने प्रक्रिया अपनाई थी कि मैं किसी की व्याख्या नहीं पढ़ूंगा जब तक बहुत जरूरत ना पड़े। मैं मंत्र देखूंगा, मंत्र का अन्वय देखूंगा। अन्वय का मतलब होता है पद्यात्मक भाषा को गद्यात्मक भाषा में बदल देना। गद्य में वह भाषा शैली कैसी होगी और उसके बाद शब्दों के अर्थ देखूंगा और देखूंगा कि हिंदी में क्या बनता है? और वहां पर मेरी जो समझ में आता है उसे मानूंगा। लोग क्या कहते है उस पर बहुत निर्भर नहीं रहूंगा। तो यह प्रक्रिया अपनाते हुए कभी-कभी मामला फंस जाता था। लगता था कि बात तो बन नहीं रही है। तब व्याख्या भी देखनी पड़ती थी। शुरू में तो कठिनाई ज्यादा हुई। व्याख्या भी सीमित देख पाते थे। हमने आधार जो लिया वो स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की व्याख्या को लिया और एक क्षेमकरण त्रिवेदी जी हैं, उनकी व्याख्या और उनकी टीकाओं को आधार बनाया। आज के युग में यहां तक आते-आते जब इंटरनेट का युग आ गया तो यह सुविधा और मिल गई कि हम सबको देख सकते हैं। तो इस तरीके से हमने ये देखा कि एक ही मंत्र है, मैंने यह समझा है, मगर और लोगों ने क्या समझा है। मैं यह कहना चाहता हूं, और लोग क्या कहना चाहते हैं। तो ये सुविधाएं लेने और अध्ययन में बड़ा समय लगा और बाद में जाकर बात मन में पक गई कि अब ये ठीक है। तो ऐसे मंत्रों का अनुवाद करने में महीनों लगे। बहुत से मंत्र अभी भी मेरे मन में हैं, बुद्धि में ठहरे हुए हैं। जिनको मैं सोचता हूँ कि अच्छा तो इसमें क्या कहा गया है? यह कैसे है? कभी-कभी लोगों से बात भी कर लेता हूँ। मुझे डॉक्टर वेद प्रकाश आर्य जी से भी काफी सहायता मिल जाती है। कभी उनसे चर्चा करता हूँ कि मैंने पढ़ा, मुझे ये लगा तो वह बताते हैं। इस तरह से और लोगों से भी चर्चा हो जाती है। एक लंबी प्रक्रिया बन जाती है। लेकिन मैं अपने अनुवाद को अंतिम रूप देकर मन से तभी परिपूर्ण समझता हूँ जब खुद निश्चित हो जाता हूँ।

*वेद मंत्रों का अनुवाद पहले भी हुआ है, हो रहा है। आप अपने अनुवादों को इनसे कैसे अलग पाते हैं?*

देखिए, वेदों पर तो कार्य न जाने कब से होता आ रहा है। अभी भी हो रहा है। आगे भी होगा। अनुवाद का कार्य भी बहुत हो रहा है। कविता में भी अनुवाद हुआ है। बहुत अच्छा लोगों ने किया है। मैंने जब अनुवाद का कार्य पकड़ा तो मेरे सामने कोई बंधन नहीं था। मुझको अपनी दिशा खुद तय करनी थी कि हमको क्या करना है और क्या नहीं करना है। बहुत से लोगों का अनुवाद भक्ति परक था। उन्होंने मंत्रों का अनुवाद किया तो उसे भजन बना दिया। जैसे धर्मयुग के पूर्व संपादक थे, विद्यालंकार जी, उन्होंने भी अनुवाद कार्य किया है वैदिक मंत्रों का। उनकी भजन की पुस्तक भी आई है और बहुत सुंदर भजन हैं। मगर वह भजन थे। कुछ अनुवाद इस अर्थ में हुए कि लोगों को मंत्र समझाना चाहते थे। बताना चाहते थे कि इसके अन्दर कितनी महानता है, कितनी बड़ी बात है, कितनी गूढ़ता है। तो उनके परोसने में समस्या यह थी कि लोगों के लिए, जो वैदिक संस्कृत नहीं जानते थे, मंत्र जितने कठिन लगते थे उसका अनुवाद भी उतना ही कठिन था। इससे बचने की जरूरत थी। चूंकि मैं मूलतः गीतकार हूँ तो मेरे मन को उनकी लय, उनके भाव, उनके कोमल तत्व ज्यादा प्रभावित करते थे। मूल रूप से कहूँ तो मंत्रों की काव्यात्मकता। तो मैं चाहता था कि वह काव्यात्मकता आ जाए। जब हम हिंदी में पढ़ें तो हमें यह न लगे कि हम अनुवाद पढ़ रहे हैं। लगे कि यह मूलतः आज की कविता है। इस ढंग से मैंने करने का प्रयास किया और इसे लोगों ने स्वीकार भी किया। लोगों ने इस पर आशीर्वाद भी दिया। लोगों की बहुत शुभकामनाएँ मिलीं। बहुत ही आश्चर्य की बात है कि जो मैं डरता था कि 'आर्य लोक वार्ता', जो आर्य समाज के विद्वानों का पत्र है, उसमें छपेगा तो लोग बहुत कमियां निकालेंगे और न जाने क्या-क्या कमियां निकल आएंगी लेकिन उनका चाहे स्नेह भाव हो, चाहे उनके अंदर ये भावना हो कि इनको प्रोत्साहित करना चाहिए, तो प्रोत्साहन ही मिला, प्रशंसा ही सुनने को मिली। आलोचना सुनने को नहीं मिली। बड़े-बड़े वैदिक विद्वानों का प्रोत्साहन मिला। तो मैंने जो अनुवाद की दिशा चुनी थी, मुझे लगा कि ये ठीक है और हमको इस पर ही टिके रहना है कि हम वेदों का कविता में अनुवाद कर रहे हैं, काव्यात्मकता के साथ कर रहे हैं। जैसे हिंदी की कविता पढ़ते समय उसके जो ट्विस्ट होते हैं क्या संस्कृत में भी होते हैं, तो हमने देखा कि होते हैं। तो मैं उस ट्विस्ट को लाया। जो संस्कृत में था वही हिंदी में भी आए। ये अनुवाद में एक कठिन कार्य होता है। तो यह जो मैंने किया तो उसमें मुझे बहुत सफलता मिली। प्रशंसा प्राप्त हुई। इसमें कहीं पर विरोध नहीं हुआ। इसी ढंग पर काम चल रहा है। लोग पसंद करते हैं, स्नेह देते हैं।

*आप पिछले २३ सालों से काव्यानुवाद कर रहे हैं, क्या आपको लगता है कि इतने वर्षों में आपकी इसकी रचना प्रक्रिया पहले से परिष्कृत हुई है और उसमें कोई अंतर आया है?*

देखिए, सबसे बड़ा अंतर तो यह आया कि लोगों के स्नेह और सम्मान के कारण जो डर था, वह खत्म हो गया। दूसरा ये कि हमको चयन कैसे करना है, वह सब चीजें हमारे मन में स्पष्ट हो गयीं कि हमें क्या चीज देनी है। वेद तो बहुत बड़े हैं। सारा अनुवाद तो होना नहीं है। चयनित मंत्रों का अनुवाद करना है। वह मन में स्पष्ट हो गया। अनुवाद करते समय पहले जो भय था, कि मैं चीजों को पकड़ पा रहा हूँ कि नहीं पकड़ पा रहा हूँ, वह धीमे-धीमे करके खत्म हो गया। एक बात यहां स्पष्ट कर दूं कि वैदिक विद्वान तो मैं अब भी नहीं हूँ। वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत दोनों पर ही मेरा अधिकार वैसा नहीं है, जैसा कि एक अनुवादक में होना चाहिए। लेकिन जो टीकाएं मिलती हैं, जो व्याख्याएं मिलती हैं, इनका सहारा ले लेता हूँ। शब्दों के अनुवाद डिक्शनरी में मिल जाते हैं, संस्कृत के शब्दकोश में देख लेता हूँ। एक आत्मविश्वास आया कि हाँ मैं कर सकता हूँ और मैं ठीक कर रहा हूँ। ऐसे करना चाहिए। तो इस परिवर्तन के कारण, वह कार्य जो शुरू में मेरे लिए बहुत कठिन था, बीच में थोड़ा सहज हुआ और अब मेरे लिए बहुत सहज हो गया है। मुझे कार्य करना है तो मैं कर देता हूँ। लगता हूँ तो हो जाता है। इसे ईश्वर की कृपा ही कहना चाहिए। अपनी कमियां तो मुझे पता है, इसके बावजूद अगर हो जाता है तो ईश्वर की कृपा ही है, बड़ों का स्नेह और आशीर्वाद है।

*आपने अब तक लगभग कितने मंत्रों का अनुवाद कर दिया है?*

इस समय २०० के ऊपर तो हो चुके हैं।

*और इस शृंखला को कहाँ तक ले जाना चाहते हैं?*

देखिए, मुझे भी बहुत पता नहीं है। 'आर्य लोक वार्ता' के हर अंक में एक अनुवाद छपता है। तो मैं प्रयास करता हूँ कि एक अनुवाद उनके पास नया नया पहुँच जाए। उसके लिए मैं तैयारी रखता हूँ। कभी-कभार ही ऐसा हुआ है कि पत्र को पुराना अनुवाद रिपीट करना पड़ा है, वरना नया ही मिला है। जैसे एक कवि कविता रचता है तो उसे विषय भी चाहिए, सब कुछ चाहिए। पर यहां तो अथाह समुद्र है, उसमें डूब जाना है, निकाल लाना है मोती। तो वह कठिनाई तो कोई है नहीं। तो चलाता भी रह सकता है।

*आप अपने सभी काव्यानुवादों को समकक्ष रखते हैं या अलग अलग पायदानों पर मानते हैं?*

देखिए, वेद मंत्रों में बहुत विविधता है। विषय को लेकर, कहन को लेकर कि कैसा वह बात प्रस्तुत की गई है। भाषा को लेकर भी विविधता है। हर मंत्र एक दूसरे से बहुत अलग है। तो जो अनुवाद है वह भी बड़े अलग-अलग हैं। तो उनकी आपस में तुलना करना इसलिए ठीक नहीं होगा कि सेब अच्छा है कि आम अच्छा है, यह कहना गलत होगा। तो तुलना करना कठिन है मेरे लिए।

*अब तक आपका यह काव्यानुवाद केवल अखबार में छपा है। उन सारे अखबारों को इकट्ठा करके रख पाना तो पाठक के लिए मुश्किल है। तो क्या आप इन काव्यानुवादों को संकलित करके एक ही स्थान पर उपलब्ध कराने की भी कोई योजना सोच रहे हैं?*

जी, एक ही तरीका है कि पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो। मैंने उनको इकट्ठा करना भी शुरू किया है। पर कोरोना काल में यह गतिविधियां रुक गई हैं। जब अच्छा समय आएगा तो सोचेंगे कि पुस्तक प्रकाशित हो जाए।

*एक पुस्तक का अगर प्रकाशन होना है तो आपके विचार से उसमें कितने काव्यानुवादों को शामिल किया जाना चाहिए?*

देखिए, ये मैं निश्चित तौर पर तो कुछ नहीं कह सकता। लेकिन अगर दो ढाई सौ मंत्र होते हैं तो कुछ ज्यादा नहीं है, एक पुस्तक में आ सकते हैं। बहुत मोटा-पोटा छाप कर और पन्ने बढ़ा कर पुस्तक को मंहगा बनाने से कोई लाभ नहीं। तो इतने तो एक छोटी पुस्तक में आसानी से आ जाएंगे।

*जो अनुवाद हुए हैं क्या इसमें कोई तारतम्य आप ढूंढ सकते हैं कि ये पहला है, ये दूसरा है या वे कहीं पर भी बैठ जाएंगे और अपनी बात पूरी कह देंगे?*

देखिए, वेदों के जो मंत्र हैं, मैं उनकी खूबियों के बारे में बताऊं तो हम कहना क्या चाहते हैं वह स्पष्ट हो जाएगा। वैदिक मंत्र अधिकतर ऐसे हैं जिनके तीन अर्थ होते हैं। एक अर्थ होना है कि भौतिक रूप में कि विषय के बारे में बात हो रही है यानी सन्नेकर क्या है, विषय क्या है? उस विषय के बारे में बात हो रही है। फिर उसी विषय को ईश्वर मान करके उस पत्र का अर्थ निकलता है और फिर ईश्वर जैसे किसी व्यक्ति, मुनि या देवता इनके अर्थ निकालते हैं। तो यह खूबी उन मंत्रों में है। जैसे उदाहरण है, सब लोग गायत्री मंत्र जानते हैं। गायत्री मंत्र सूर्य की आराधना है, प्रार्थना है। लेकिन, सूर्यों का सूर्य जो ईश्वर है उसकी भी प्रार्थना है और तीसरी चीज, जो लोग ईश्वरीय सूर्य जैसी तेजस्विता रखते हैं उनके लिए भी है। यह खूबी वैदिक मंत्रों में पायी जाती है। इतनी बड़ी खूबी कि एक मंत्र के तीन-तीन अर्थ निकलें। अधिकांश मंत्रों में ऐसा है। चौथी एक और चीज जुड़ी हुई है वेद मंत्रों में कि जब वह पढ़े जाते हैं अपने सही ढंग से, जो वैदिक पाठ का तरीका है, तो उससे जो ध्वनि निकलती है, उसकी जो तरंगे होती हैं उनका भी लाभ होता है। जैसे फिर मैं इसी का उदाहरण दूंगा। अगर आप गायत्री मंत्र पढ़ते हैं तो सूर्य से प्रार्थना करते हैं और उसकी तेजस्विता की प्रार्थना करते हैं कि ये हमको मिले और हमारे पाप और बुराइयां सब नष्ट हो जाए और यही प्रार्थना ईश्वर के लिए भी हो जाती है कि ईश्वर अपने तेज से हमारी समस्या खत्म कर दे। ऐसे व्यक्ति के ऊपर भी लागू जो हमको लाभ पहुंचा सकता है, जो सूर्य की तरह तेजस्वी है। ईश्वर के कुछ गुण तो उसके अंदर हैं, यह उसके ऊपर भी लागू होती है। चौथी चीज भी आती है वैदिक मंत्रों में। वेद मंत्र के पाठ से जो ऊर्जा निकलती है तरंगों के रूप में वह लाभ पहुंचाती है। अगर आप गायत्री मंत्र का विधिवत पाठ करते हैं तो निश्चित ही उससे आपकी बुद्धि तेज होगी। बुद्धि बहुत प्रखर हो जाएगी। तो उसमें जो मांग की गई है, इसे मंत्र के पाठ से उसमें भी लाभ मिलता है। यानी कोई व्यक्ति अगर उसका अर्थ नहीं जानता है लेकिन उसका सस्वर पाठ सही ढंग से करता है तो उस मंत्र का लाभ उसे मिलता है। तो इस तरह वेदों के अधिकतर मंत्र जो हैं वह अकेले में ही अपने में संपूर्ण हैं। तो उनको कहीं भी रखा जाए उससे फर्क नहीं पड़ता। ये अनुवाद मैंने किसी क्रमानुसार नहीं किया है। लेकिन अगर पुस्तक तैयार होगी तो जिस क्रम में वेदों में मंत्र हैं, जिसका मैंने अनुवाद किया है, उनको उसी क्रम में रखने का प्रयास किया जाएगा। ताकि लोगों को यह लगे कि हां यह पहला मंत्र है और यह इसके बाद का मंत्र है। एक

(शेष पृष्ठ 4 पर)

# शुभाकांक्षा

आर्य लोक वार्ता का मार्च २०२० अंक पढ़कर मेरा मन प्रसन्नता से भर उठा। कारण, उसमें प्रकाशित 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका स्मारक' के शिलान्यास का समाचार था- जो दिनांक २७.०२.२० को सरयू बाग, अयोध्या में आर्य समाज की गौरव मूर्ति स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती एवं कर्मयागी श्री आनन्द कुमार आर्य द्वारा सम्पन्न हुआ था। उदयपुर के 'सत्यार्थ प्रकाश न्यास' की भाँति 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका स्मारक' श्रीरामजन्मभूमि अयोध्या में निर्मित होनेसे एक चिरकालीन अभाव की पूर्ति होगी तथा वैदिक धर्म के यथार्थ स्वरूप का दर्शन दुनिया वालों को हो सकेगा, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। 'आर्य लोक वार्ता' का मैं लगभग दो दशक से निरन्तर पाठक हूँ तथा समय समय पर कविताएँ, लेख, टिप्पणियाँ लिखता भी रहा हूँ। इस श्रेष्ठ पत्र में श्री बाँके बिहारी 'हर्ष', श्रीमती रामा आर्य 'रमा' की कविताओं का मैं प्रशंसक रहा हूँ तथा आपके सम्पादकीय एवं श्री अमृत खरे का वेदमंत्र काव्यानुवाद तो आर्य समाज के साहित्यिक गौरव और सौष्ठव की श्रेष्ठता को प्रमाणित करते हैं। समस्त आर्य जगत से मेरा साग्रह अनुरोध है कि वेदभाष्य स्मारक को दिल खोलकर आर्थिक सहयोग प्रदान करें, साथ ही 'आर्य लोक वार्ता' को भी आर्थिक सहयोग अधिक से अधिक- बैंक आफ बड़ोदा के खाते में जमा करके प्रदान करें जिससे वैदिक धर्म की मर्यादा, प्रतिष्ठा और गौरव की रक्षा का कार्य अबाध गति से होता रहे।

*-ओम प्रकाश आर्य*
*कोटा, राजस्थान*

***

मैं समझता हूँ कि कोई बिरला ही जिज्ञासु न हो और हो जो जिज्ञासु है वह जीवन पर्यन्त जिज्ञासु ही बना रहे। अब यहाँ अन्तर मात्र इतना है कि जो जिज्ञासु है वही दूसरे की जिज्ञासुकता को समझ सकता है। वह किसी दायित्व से नहीं। खैर यहाँ मेरा प्रयोजन यह है कि ब्राह्मण वर्ण से ही नहीं अपितु कर्म से भी सक्षम हैं ऐसे में आप मुझ जिज्ञासु के प्रशिक्षक होने के कारण मेरे हित में मार्गदर्शक हों। स्वामी अपने सेवक को मूढ़ ही रखने में होता है। हम अति विनम्रता के साथ अर्ज करते हैं कि आप अपने को ऐसा न होने दें। विद्वानों का कर्तव्य बनता है कि वे स्वयमेव दखल दें। क्योंकि मिथ्या बात को न रोकने से अनर्थ ही होना है। राजनीति की भी कोई रीति होनी चाहिए। सत्य से समझौता कर चुप बैठना कतई योग्य नहीं। अस्तु गलत लांछन आदि के काट को हर पार्टी में कोई तो व्यक्ति होना चाहिये। आम व्यक्ति को आखिर कैसे पता हो कि दोषारोपण सही है या पक्षपातपूर्ण है। किसी की भी गलत हावभाव/चेष्टा को रोकना समाज के बौद्धिक जनों को जरूरी है। जो जन्मा उसका मरना तो होना ही है। अस्तु अपने आप के लिये ही होगा जो जान से खेल जाय सही में वह ही मनुष्य है।

*-बाँके बिहारी 'हर्ष'*
*अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद*

***

'आर्य लोक वार्ता' का मार्च २०२० अंक अत्यंत सुंदर प्रकाशित हुआ है, सम्पादक मंडल को बधाई। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका स्मारक के शिलान्यास का शुभ संकल्प मूर्त रूप ले सका- यह मेरे लिए हर्ष और गर्व की बात है। इसका सम्पूर्ण विवरण आपने जिस योग्यता और दक्षता के साथ प्रकाशित किया है; वह अभिनन्दनीय है। 'हनुमत्कृपा के संकेत' का व्यंजनात्मक शीर्षक हृदयग्राही है और जन सामान्य में स्मारक के प्रति अभिरुचि को जागृत करता है। इससे धर्मप्राण अयोध्यावासियों में भी दानशीलता के संस्कार जागृत होंगे और आगे बढ़कर राममंदिर के साथ वेदभाष्य मंदिर निर्माण हेतु अपना सहयोग प्रदान करेंगे- ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

*-आनन्द कुमार आर्य*
*प्रधान, आर्य समाज टाण्डा, अम्बेडकरनगर*

***

आर्य लोक वार्ता का मार्च २०२० अंक मिला। डाक वितरक धन्यवाद के पात्र हैं। कोरोना काल के कारण सभी परेशानी झेल रहे हैं तथापि यह अंक अत्यंत सुंदर बन पड़ा है। छपाई, रंगाई के साथ कागज तथा साजसज्जा सभी कुछ भव्य है। आशा है, छपाई संबन्धी यह भव्यता कृष्णाजी (प्रिंटेक) आगे भी बनाये रखेंगे क्योंकि आर्य लोक वार्ता सामान्य पत्र न होकर स्वाध्याय का पत्र है। लोग इसे पढ़ते हैं और संभाल कर रखते भी हैं। आलोच्य अंक में स्व. पारिजात नागर के संबन्ध में श्री संजय माथुर का परिचयात्मक विवरण उपयोगी है। साथ ही ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका स्मारक न्यास संबन्धी समाचार पूर्ण, दिशादर्शक नवीनता लिये है। 'हनुमत्कृपा का संकेत' सभी को आकर्षित करता है। सम्पादक मंडल को साधुवाद। *(वार्ता)*

*-अमृत खरे*
*विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ*

***

आर्य लोक वार्ता मार्च अंक के प्रथम पृष्ठ पर अंकित अग्रलेख में तीन घटनायें आश्चर्य चकित करती हैं भूमिपूजन के सुअवसर पर पूज्यपाद संन्यासी सहित सभी वर्णों की उपस्थिति, हनुमत्कृपा, उस हेतु किया गया पवित्रदान साथ ही मो.इरफान की उदारता! पूज्य स्वामी दयानन्द ने दूरस्थ देश से अयोध्या नगर के सरयूबाग में स्थित होकर वेदभाष्य हेतु भूमिका तैयार की जैसे अयोध्या अजेय है, श्रीराम अतुलनीय एवं अजेय हैं उसी तरह वेदोद्धारक स्वामी दयानन्द का भाष्य, भाष्यभूमिका के वेदोत्पत्ति से लेकर ग्रन्थ संकेत तक सभी विषय अतुलनीय एवं अजेय है और स्वामी जी द्वारा कृत भाष्य आमजन के लिए पाथेय है जबकि किसी काल में रावण, उव्वट, सायण, महीधर आदि ने वेदों को घृणास्पद शर्मसार वाला करके आमजन को ईश्वरीय ज्ञान से दूर से दूरस्थ कर दिया था। तब स्वामी दयानन्द ने स्वप्रेरणा से यहाँ पधार कर अपने सारस्वत गुणधर्म का सदुपयोग करते हुए आमजन हितार्थ वेदों का उचित, सामयिक एवं व्यवहारिक भाष्य प्रस्तुतकरके हम सब पर अमर उपकार किया है। अस्तु, ऐसे अवसर पर रामभक्त हनुमान की कृपा, संन्यासी से लेकर यजमान एवं अन्यों द्वारा स्मारक हेतु किया गया दान, स्मारक समिति के कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन ही करता है। यह विधाता का अद्भुत संयोग है कि एक ओर वेदोक्त जीवन के नायक श्रीराम की जन्मभूमि विधर्मियों से मुक्त हुई और इस ओर वेद प्रवर्तक स्वामी दयानन्द का सरयूबाग में स्मारक हेतु हलचल बढ़ी। श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य मंदिर बन जाने और सरयूबाग की भूमि पर भव्य स्मारक बन जाने के पश्चात आगामी शिक्षित सन्तानें इन दोनों को देखेंगी तो निश्चय ही यह व्यक्त होगा कि एक ओर भाष्यभूमिका का स्मारक है जो कि सर्वजन का पाथेय है और दूसरी ओर वेदोक्त जीवन जीने वाले आदर्श एवं मर्यादा पूर्ण आचरण है जो कि सर्वजन का पाथेय है। इन दोनों की तुलना में भाष्य भूमिका का स्मारक अति प्रभावशाली है क्योंकि बिना ज्ञान के कर्म व आचरण कहाँ? एक ओर वैदिक सिद्धान्त के प्रणेता की स्मृति तो दूसरी ओर वैदिक मर्यादा की स्मृति! धन्य है अजेय, पवित्र अयोध्या! ऐसा संयोग और कहीं नहीं।

*-प्रेमचंद शर्मा*
*15, बहादुर पुर, लखनऊ*

***

आर्य लोक वार्ता मार्च २०२० अंक मुझे प्राप्त हुआ। पूरा पढ़ गया। ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के महत्व पर आचार्य राजवीर शास्त्री का लेख अत्यंत विद्वत्तापूर्ण है। इससे जनता को वेद भाष्य के इस महान् ग्रन्थ के गौरव का स्मरण हो जायेगा। स्मारक के शिलान्यास का विवरण तो बहुत ही दिलचस्प है। खासकर 'हनुमत्कृपा' का संकेत तो अत्यधिक प्रभावी बन पड़ा है। आपने पूज्य महात्मा आर्यभिक्षु के सम्बन्ध में जो संस्मरणात्मक लेख लिखा है; वह तो आपकी लेखनी का चमत्कार ही है। सम्पूर्ण अंक विविधताओं से परिपूर्ण है। सम्पादकीय तो विचारोत्तेजक है और अमृत खरे जी का वेदमंत्र का काव्यानुवाद तो अविस्मरणीय है। सम्पादक मंडल का हार्दिक बधाई।

*-आचार्य सत्यप्रकाश आर्य*
*आवास विकास कालोनी, बाराबंकी*

***

आर्य लोक वार्ता का अंक मार्च २०२० हर दृष्टि से पठनीय है। स्वाध्याय की प्रचुर सामग्री इस अंक में विद्यमान है, साथ ही सुंदर भविष्य के लिए अनेकानेक प्रेरणाएँ इसमें छिपी हुई हैं। विशेषकर 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका स्मारक' निर्माण हेतु जो प्रयास कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य, आर्य जगत के गौरव स्वामी श्री प्रणवानन्द जी, ठाकुर विक्रम सिंह, पं.दीनानाथ शास्त्री इत्यादि द्वारा किये जा रहे हैं, वे एक उज्ज्वल भविष्य की ओर इशारा करते हैं। संयोगवश 'हनुमत् कृपा' का जो संकेत मिला है, वह भी काफी रोचक और आकर्षक है। 'हैं वेद वचन ऐसे जैसे मीठे फल डाली के' वेदमंत्र का काव्यानुवाद भी डाली के मीठे फल की ही भाँति है। जैसे वेद वचन वैसे ही उसका काव्यानुवाद। गीत ऋषि अमृत खरे ने काव्यानुवाद के क्षेत्र में एक युगान्तर उपस्थित कर दिया है। जितनी सराहना की जाय कम है। सम्पादकीय लेख व्यूह रचना में प्रवीण कतिपय राजनीतिज्ञों की कुटिल नीतियों पर करारा प्रहार है। डॉ.वेद प्रकाश आर्य के अलावा अन्य कौन इस प्रकार की सूझबूझ के अग्रलेख लिख सकता है। सम्पादक की सूझबूझ और लेखन शैली प्रभावित करती है तथा उन्हें एक पृथक् पहचान प्रदान करती है। 'काव्यायन' में 'जाग तुझको दूर जाना' शीर्षक श्रद्धेया श्रीमती महादेवी वर्मा का गीत एक शाश्वत प्रेरणा भरा संदेश लिए है। महादेवी के गीत का प्रकाशन करके आपने कवियों को भी जगाने की कोशिश की है। इस सबके अलावा इस अंक की छपाई, साज सज्जा भी अति उत्तम है। सुंदर कागज पर साफसुथरे मुद्रण हेतु कृष्णाजी बधाई के पात्र हैं।

*-रामा आर्य 'रमा'*
*417/10, नेवाजगंज, चौक लखनऊ 226003*

***

*(पृष्ठ 3 का शेष...)*

**कोई अनुवाद.....**

धुंधला सा आभास उसको हो जाए कि ऐसा है। जैसे ऋग्वेद का पहला मंत्र है- 'अग्निमीळे पुरोहितं'। पहले-पहले मंत्र में जीवन का सत्य, प्रकृति का सत्य, ईश्वर का सत्य और समग्र रूप से जो परम सत्य है उसको एक मंत्र में कह दिया गया है। ईश्वर से कहा गया कि एक यज्ञ हो रहा है पूरी सृष्टि में, पूरी प्रकृति में, उस यज्ञ के करने वाले भी आप हैं, कराने वाले भी आप हैं, आप ही उसमें सबकुछ हैं। तो पहले ही मंत्र में बता दिया गया कि जो कुछ है, सब ईश्वर है और उसके बाद वेदों में विवरण आने शुरू हुए। तो वेदों का क्रम तो है। तो मैं उनके क्रम को ही मानकर चलूंगा। अब मैं उसको ठीक से समझ पाया या नहीं समझ पाया, लेकिन मैं यह मान कर कि वेदों का क्रम ठीक है, उसी क्रम में रखने का प्रयास करूंगा।

*आपने बताया कि वेदों के मंत्रों से चार भाव निकलते हैं तो क्या हम यह कह सकते हैं कि आपके अनुवादों से भी चार भाव निकलते हैं?*

नहीं, ये बिल्कुल असंभव है इसलिए विद्वान लोग स्वीकार करते हैं कि वेद ईश्वरीय वाणी है। ये मनुष्य के बनाये हुए नहीं हैं, उनको मिल गये हैं। ईश्वर की कृपा से ऐसा संभव हुआ है। किसी भाषा में अभी तक ऐसा नहीं हुआ। जैसे मैं फिर गायत्री मंत्र का उदाहरण दूंगा। गायत्री मंत्र के उनमें तीन अर्थ तो निकल आवेंगे- सूर्य, ईश्वर और सूर्य के समान तेजस्वी व्यक्ति। लेकिन हमारे हिंदी अनुवाद को पढ़ करके बुद्धि प्रखर होगी ऐसा नहीं होगा क्योंकि ये क्षमता तो मंत्र में है। उन शब्दों को, उन अक्षरों को, उन वर्णों को जब आप उसी भाव से, उसी लय से, और वैदिक पाठ जैसे होता है, करेंगे तो वह तरंगें निकलेंगी। तो यह नहीं होना है। ये अनुवाद की सामर्थ्य ही नहीं है। हमारे अनुवाद का या किसी के अनुवाद का जो अभी तक अर्थ रहा है, वह यह रहा है कि लोगों में रुचि पैदा हो वेदों को जानने की, पढ़ने की। हमारे अनुवाद से उन्हें आनंद मिले, जो कविता का मूल भाव होता है कि व्यक्ति के अंदर आनंद को जन्म देती है। तो आनंद मिल सकता है, दिशा दिख सकती है लेकिन वेद मंत्र का सम्पूर्ण और सम्यक् लाभ लेने के लिए, वस्तुतः वेद मंत्र ही पढ़ने होंगे, वेद ही पढ़ने होंगे।

*जो वेद पाठी हैं, जो वेद का सस्वर पाठ करते हैं, आपके अनुसार उनके पाठ से जो ध्वनि तरंगे पैदा होती हैं वह अपना प्रभाव मनुष्य के ऊपर डालती हैं। क्या इस बात के कोई वैज्ञानिक प्रमाण मौजूद हैं?*

जी। इस पर बहुत जगह शोध हुआ है। डॉक्टरों ने किया है, वैज्ञानिकों ने किया है। जो गायत्री मंत्र है, इस पर बड़ा लम्बा शोध कार्य हुआ है। उसमें भारत भी शामिल था और विदेश के भी संस्थान शामिल रहे हैं। उन्होंने इस बात को माना है। ऐसे ही शिव संकल्प मंत्र हैं। जिसको शिवजी की पूजा मानकर लोग करते हैं। उसमें जांच हुई है तो पाया गया है कि वास्तव में इतनी जबर्दस्त ऊर्जा उत्पन्न होती है उनके पाठ से कि पूरा वातावरण बदल जाता है। तो यह शोध कार्य चल रहे हैं। लेकिन वे शोध कार्य मेरे काव्यानुवाद का हिस्सा नहीं है, मेरी क्षमता में भी नहीं है। मैं अपना कार्य कर रहा हूँ, वैज्ञानिक लोग अपना कार्य कर रहे हैं।

*आपको इन काव्यानुवादों की बहुत सी प्रतिक्रियाएं मिलीं। क्या कोई ऐसी प्रतिक्रिया भी आपको मिली जिसने बताया हो कि इन काव्यानुवादों से उसे बहुत लाभ हुआ है?*

प्रतिक्रियाएं तो बहुत अच्छी आई जो 'आर्य लोक वार्ता में छपीं।' बहुत सी किताबों में, शुरुआत में इन अनुवादों को छापा गया है। बहुत से कॉलेज की पत्रिकाओं में पहले पन्ने पर ये अनुवाद छपे हैं। लोगों ने प्रशंसा की। लेकिन, ऐसा कहीं संदेश तो नहीं मिलता कि कोई कहता हो कि मुझे इसे पढ़ने से लाभ हुआ। कहते हैं कि अच्छा लगा, बड़ा महत्वपूर्ण है या इससे हमें बड़ी प्रेरणा मिली। इस तरह के संकेतों में लोग बात करते हैं। लखनऊ में आचार्य ओजोमित्र शास्त्री जी वैदिक विद्वान हैं, अब नहीं रहे, उन्होंने जो पत्र लिखा था, उन्होंने बहुत बड़ी बात कही थी। उन्होंने कहा था कि यह अनुवाद जो अमृत ने किया है उसको पढ़कर लगता है कि उनके ऊपर ईश्वर की कृपा है कि इसका अनुवाद कर सके। जब एक वैदिक विद्वान ये बात कहता है, तो लगता है कि हाँ कुछ ठीक तो है मामला। मैंने उसे आशीर्वाद के रूप में लिया और फिर और ध्यान लगाया।

*अंत में हम यही कामना करते हैं कि मंत्रों के काव्यानुवाद की आपकी पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित होकर हम सब तक पहुँचे और हम उसका लाभ उठायें। यह निश्चित तौर पर एक संदर्भ पुस्तक होगी जिसको प्रतिदिन पढ़कर कुछ नया जानने का सीखने का अवसर हम सबको अवश्य मिलेगा।?*

*आपने इतनी कुशलता से हम लोगों को अपनी इस वार्ता में बहुत कुछ बताया, समझाया, सिखाया...इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।*

संजय जी, आपका भी बहुत-बहुत धन्यवाद।

धारावाहिक-14 कालजयी रचना

# आर्य-संस्कृति के मूल तत्त्व

-डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार-

गीता में इस मनोभाव को प्रकट करते हुए लिखा है-

यस्य सर्वे समारंभाः कामसंकल्पवर्जिताः।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पंडितं बुधाः।।
त्यक्त्वा कर्मफलासंगं नित्यतृप्तो निराश्रयः।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किंचित्करोति सः।।

जो कर्म करता है, परन्तु कामना से नहीं करता, जो ज्ञान की अग्नि से 'कर्म' में अन्तर्निहित 'कामना' को दग्ध कर देता है, जला देता है, जो कर्म के फल की भावना को, संग को, मोह को, आसक्ति को छोड़ देता है, उसका आत्मा सदा तृप्त रहता है, उसे किसी दूसरे का आश्रय, सहारा ढूंढने की आवश्यकता नहीं रहती। वह कर्म करता है, परन्तु दिन-रात सब-कुछ करते हुए भी मानो कुछ नहीं करता।

सदियां बीत गयीं जब अर्जुन को श्रीकृष्ण ने आर्य-संस्कृति का यह संदेश सुनाया था। अर्जुन के जीवन-रूपी रथ का संचालन श्रीकृष्ण महाराज ने सारथि बनकर किया था। सारथि का काम रथ चलाना मात्र नहीं, परन्तु ठीक रास्ते से रथ का चलाना है। सारथि रास्ता दिखाने वाला होता है, पथ-प्रदर्शक होता है। आज हम भी अपने को अर्जुन की स्थिति में रख सकते हैं। जीवन में समय-समय पर सबके सम्मुख द्विविधा की सी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अर्जुन के सम्मुख जब युद्ध का सम्पूर्ण दृश्य आया, तो वह विचलित हो उठा। इस युद्ध का फल क्या होगा? हार होगी, जीत होगी? इस संग्राम में पडूं, न पडूं? अपने प्रतिदिन के मिलना वालों से लडूं, न लडूं? क्या हमारे जीवन में भी ऐसी स्थिति प्रायः नहीं उपस्थित हो जाती? हम उन लोगों का साथ देते हैं जिनका साथ हमें नहीं देना चहिये, इसलिये कि वे हमारे मित्र हैं, मिलने-जुलने वाले हैं। हम उनसे लड़ाई मोल लेना नहीं चाहते, इसलिये नहीं चाहते कि हमें सन्देह होता है कि हम जीतेंगे, या हारेंगे! गीता में दिया गया श्रीकृष्ण का सन्देश कहता है- 'ऐ आज के नौजवान अर्जुन! भगवान् के विराट् स्वरूप का दर्शन कर, अपनी संकुचित दृष्टि से मत देख। पाप ज्यों-ज्यों बढ़ता है, त्यों-त्यों उसके विनाश का समय निकट आता जाता है। यह तो नष्ट होकर रहेगा, फिर तू ही इसके विनाश में पहल क्यों नहीं करता? क्या तुझे यह द्विविधा है, यह घबराहट है कि तुझे सफलता मिलेगी, या न मिलेगी? देख, तेरा यह सोचना बेकार है, तू 'निष्काम-भाव' से अपना कर्त्तव्य पालन किये जा, और फल को भेंट के रूप में भगवान् के चरणों में चढ़ा दे।' अर्जुन चले गये, श्रीकृष्ण चले गये, परन्तु श्रीकृष्ण ने जिस जादू से अर्जुन की दुविधा, उसकीक्लीवता, उसकी कायरता को दूर किया था वह आज भी गीता के उपदेश के रूपमें मौजूद है, और जिस समय भी किसी नवयुवक में दुविधा या कायरता के विचार का उदय हो, उसी समय उसे दूर करनेवाले 'निष्काम-कर्म' के उदात्त विचार की गूंज गीता के पन्ने-पन्ने से उठती हुई सुनाई पड़ सकती है। गीता के पन्ने-पन्ने से गूंजने वाला आर्य-संस्कृति का यह सन्देश जब तक सूर्य और चन्द्र रहेंगे तब तक अमर रहेगा। यह सन्देश आर्य-संस्कृति के मूल-तत्त्वों में से एक सबसे महान तत्त्व है।

## कर्म का सिद्धान्त

अपने देश के प्रचलित कथानकों के अनुसार मनुष्य-देह चौरासी लाख योनियों के बाद मिलता है। एक अन्धे का दृष्टान्त दिया जाता है जो चौरासी लाख दरवाजे वाली घुमरघेरी के भीतर उसकी दीवार के साथ साथ बाहर निकलने का रास्ता टटोल रहा है। इसमें केवल एक दरवाजा खुला है, बाकी सब रास्ते बन्द हैं, परन्तु जब वह अन्धा हाथ से टटोलता-टटोलता खुले दरवाजे के समीप पहुंचता है, तो उसे जोर की खुजली उठती है, और वह आगे निकल जाता है, और फिर चौरासी लाख दरवाजों को खटखटाने के फेर में पड़ जाता है। पशु-पक्षियों की भिन्न-भिन्न योनियां वे बन्द दरवाजे हैं, जिनमें से आत्म-तत्त्व बाहर निकलकर स्वतंत्र होने का यत्न करता है, परन्तु इनमें से निकल नहीं सकता, मनुष्य की योनि खुला दरवाजा है, इसपर पहुंचकर यह आत्मा अपने बंधनों को काटकर स्वतंत्र हो सकता है, परन्तु काम-क्रोध-लोभ-मोह की खुजली उसका ध्यान दूसरी तरफ खींच देती है, और वह फिर जन्म-जन्मान्तरों के इसी चक्र में फिरता हुआ बाहर निकलने का रास्ता टटोला करता है। जिन लोगों ने हमारे समाज के एक-एक झोंपड़े तक ऐसे कथानकों को पहुंचाया था उन्होंने चौरासी लाख योनियों की गिनती नहीं की थी, मनुष्य-देह के महत्त्व को समझाने के लिए ऐसे कथानकों को रचा था। वे लोग मानव-जीवन को एक खिलवाड़ नहीं समझते थे, एक समस्या समझते थे, उनका कथन था कि मनुष्य-योनि बड़ी दुर्लभ है, उसे पाकर उसे हाथ से यूं ही निकल जाने देना मूर्खता की पराकाष्ठा है।

## कर्म तथा कार्य-कारण का नियम-

इस सारे लम्बे-चौड़े चक्र में पड़ जाने का कारण क्या है? उनका कहना था कि इसका कारण है- 'कर्म'। परन्तु यह 'कर्म' क्या वस्तु है? भौतिक-जगत् का आधार-भूत नियम कार्य-कारण का नियम है--इसे सब-कोई जानता है। कोई कार्य ऐसा नहीं हो सकता जिसका कारण न हो, न कोई कारण ही ऐसा हो सकता है जिका कोई कार्य न हो। जिस कार्य का कारण नहीं वह कार्य नहीं, जिस कारण का कार्य नहीं वह कारण नहीं। यही कार्य-कारण का नियम जब भौतिक-जगत् के स्थान में आध्यात्मिक-जगत् में कार कर रहा होता है तब इसे 'कर्म का सिद्धान्त' कहते हैं। कार्य-कारण के भौतिक-नियम का आध्यात्मिक-रूप ही कर्म है।

कार्य-कारण का नियम भौतिक-जगत् का एक अटल नियम है। कारण उपस्थित होगा, तो कार्य होकर रहेगा। एक सुन्दर दो मास का बच्चा पाला पड़ते हुए बाहर पड़ा रह गया। उसे सर्दी लग ही जायगी, सर्दी इस बात की पर्वा नहीं करेगी कि बच्चा छोटा-सा है, दो मास का ही है, सुन्दर है, माता-पिता की भूल से बाहर रह गया है, उसका अपना कोई दोष नहीं है। कुछ नहीं--किसी बात की रियायत नहीं, कारण उपस्थित हुआ है, कार्य होगा--अवश्य होगा, किसी तरह की ननु-नच की सुनवाई नहीं होगी।

*(आर्य संस्कृति के मूलतत्त्व' ग्रंथ से साभार क्रमशः)*

व्याख्यान माला-6

# शंकर और दयानन्द

-महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती-

### तीसरा दिन

मेरी प्यारी माताओं और सज्जनों!

पिछले दो भाषणों में हमने पहली बात यह देखी कि जगद्गुरू शंकराचार्य और महर्षि दयानन्द एक ही मिशन को लेकर आगे बढ़े। दोनों ने मानव को ऊपर उठाने और संसार में शान्ति लाने का साधन ब्रह्मजिज्ञासा को बताया। दोनों ने यह भी कहा कि ब्रह्म को खोजने में पूर्ण जिज्ञासु में चार गुण होने चाहिए। इन चार गुणों में से एक गुण है "षट् सम्पत्ति, पहली सम्पत्ति का नाम है 'शम' वह शक्ति कि मनुष्य प्रत्येक दशा में शान्त रहे। प्रत्येक दशा में शान्त रहने के लिये मन को वश में रखना अत्यावश्यक है। मन को वश में रखने के लिए चार साधन मैंने कल बताये। उनमें से एक है संसार की वास्तविकता को समझना, आत्मा क्या है और अनात्मा क्या है, इस बात को जानना॥ दूसरा साधन है अच्छे विचारों को जगाना॥ तीसरा साधन है त्याग। चौथा साधन है हर समय ईश्वर को याद रखना, उसके नाम का जाप करना। पांचवाँ साधन है उत्तम अन्न का सेवन छठा साधन आज बताऊंगा। जिन लोगों के मन में नित्य चिन्ता रहती है, जो हर समय चिन्ता के सागर में डूबे रहते हैं, वे इस साधन को ध्यानपूर्वक सुनें। साधन यह है कि अपनी आवश्यकताओं को कम करो। प्राचीन काल में हमारे पूर्वज कहते थे कि आवश्यकताओं को कम करने से शान्ति होती है। हमने यह समझ रक्खा है कि आवश्यकताओं को बढ़ाने में ही कल्याण है। पहले हम आवश्यकताओं को बढ़ाते हैं, फिर इन्हें पूरा करने के लिए धन कमाना आरम्भ करते हैं। घर में देवी भी कमाती है। 'देवा' भी कमाता है, फिर भी आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं। तब चिन्ताओं के बादल उमड़ आते हैं। हर समय 'और लाओ, और लाओ' की पुकार होती रहती है। अरे यह 'मनुवा राम' है न, इसको ढील मत छोड़ो। एक बार इसको ढील दोगे तो फिर यह तुम पर छा जायेगा, अमर बेल की भांति। वृक्ष नहीं बढ़ेगा उस समय बेल बढ़ेगी। जिस वृक्ष पर अमर बेल छा जाये वह वृक्ष सूख जाता है। जिस मनुष्य पर मन की अमर बेल छा जाये उसका आत्मा दुःखी हो उठता है मन को वश में करने और शान्त रखने का उपाय केवल एक है कि अपनी आवश्यकताओं को कम करो। यह शरीर है तुम्हारा, इससे तुम को कार्य लेना है, इसे भोजन खिलाओ अवश्य, परन्तु इसकी क्या आवश्यकता है कि भोजन के साथ उसको चटनी, मटनी, खटनी भी खिलाते जाओ, और पेट के अन्दर एक 'अखिल भारतीय भोजन सम्मेलन' आरम्भ कर दो। जब तुम बहुत सी चीज एक साथ खा लेते हो तो जानते हो कि पेट में क्या होता है। भिण्डी एक ओर जाकर बैठ जाती है, कहती है, 'मुझे तो देर में पचना है। मैं बैठती हूँ, तुम पच लो।' आलू कहते हैं, 'हम भी विश्राम करेंगे, अभी तो बहुत सी वस्तुएं हैं पचने के लिए, हमें जल्दी क्या है।' मूंग की दाल कहती है, 'मैं तो झट पच जाती हूं, मेरे लिए जल्दी क्या है, दूसरे आग में पड़ें। वे पच जायें तो मैं बढ़ूंगी।' इस प्रकार उनका झगड़ा होता है, रोग आते हैं। रोगों को दूर करने के लिए डाक्टरों के पास जाना पड़ता है, औषधियाँ क्रय करनी पड़ती हैं, उन पर रुपया खर्च होता है, तब रुपया कमाने की धुन सवार होती है। उत्तम उपयों से रुपया न मिले तो लोग बेईमानी से कमाने का प्रयत्न करते हैं। कहाँ से आरम्भ होकर कहाँ पहुँच जाती है बात। तब आरम्भ में ही अपनी आवश्यकताओं को कम क्यों न करो। थोड़ा क्यों नहीं खाओ। याद रक्खो मन को वश में करना है और चिन्ताओं से मुक्ति प्राप्त करनी है तो आवश्यकताओं को कम करो, उन्हें बढ़ाओ नहीं। ये छः साधन हैं मन को वश में रखने के। इन पर चल कर देखिये। मन आप के वश में आयेगा निश्चय रूप से।

'शम' के गुण को उत्पन्न करने के लिए, इस महान सम्पत्ति को प्राप्त करने के लिए दूसरा उपाय है योग साधना। योग का अर्थ है व्यष्टि को समष्टि में मिला देना। एक मन आप के अन्दर है, इसी प्रकार एक मन सारे विश्व में फैला है, उसे समष्टि बुद्धि कहते हैं। एक चित आपके अन्दर है, इसी प्रकार एक समष्टि चित बाहर है समस्त संसार में। एक प्राण आपके अन्दर है, इसी प्रकार का एक समष्टि प्राण सारे संसार में। अपने मन को, बुद्धि को, चित को और प्राण को विश्व में फैले हुए इस समष्टि मन, समष्टि बुद्धि, समष्टि चित और समष्टि प्राण के साथ मिला देने से योग का पहला अंग पूरा होता है। ऐसा करने से 'शम' की सम्पत्ति उत्पन्न होती है।

आप कहेंगे कि यह व्यष्टि और समष्टि की बात तो समझी, परन्तु ऐसा करने का उपाय भी तो बताओ। मैं उपाय भी बताऊँगा। ऐसा उपाय जिसे सीखने और प्राप्त करने में साधु लोग वर्षों लगा देते हैं। मैं आपको कुछ वाक्यों में बताऊँगा फिर करना न करना आपका कार्य है।

देखिये प्रातः ३ बजे से ६ बजे तक का समय २४ घण्टे में सबसे उत्तम समय होता है। इस समय में नहा धोकर नहीं तो मुँह हाथ धोकर एक स्थान पर बैठ जाओ। ऐसे स्थान पर बैठो जहाँ ध्यान भक्ति और यज्ञ के अतिरिक्त कुछ न होता हो। परन्तु प्रतिदिन उसी स्थान पर बैठो, कोई भी अन्य बात वहां न होने दो। यदि बड़ा घर है तो एक कमरा इस कार्य के लिए निश्चित करो। घर बड़ा नहीं एक कमरा ही है तो उसके एक भाग को इस कार्य के लिए निश्चित करो। अपने समक्ष धूप या अगरबत्ती जलाओ, घी का दीपक जलाकर रख लो, पानी का लोटा रख लो। और बैठ जाओ एक आसन से। एक आसन का अर्थ है बैठने की ऐसी विधि जिसमें साथक अधिक से अधिक समयतक बिना किसी कष्ट के बैठ सके। सदा एक ही आसन में बैठो। पद्मासन, सिद्धासन, शवासन, ऐसे कई आसन हैं। उन सब में से किसी एक आसन को अपना लो। उसको अपनाये रक्खो। सिद्धासन और पद्मासन उत्तम हैं। उनमें पालती मार कर पीठ और ग्रीवा को एक सीध में रखकर बैठना होता है।

परन्तु आजकल तो विचित्र समय आ गया है न। कई स्थानों में लोगों को पालती मारना ही भूल गया है। मैं अफरीका में गया, वहाँ कुछ लोग पालती मारना ही नहीं जानते। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि जो लोग सिद्धासन या पद्मासन में नहीं बैठ सकते, वे योग के मार्ग पर चल ही नहीं सकते। जो लोग पालती न मार सकें, उनके लिये अच्छा है कि वे शवासन अपना लें। शव कहते हैं लाश को। लाश की भांति लेट जाओ। पांव के अंगूठों को कपड़े का छल्ला बनाकर उसमें डाल दो, कमर के ऊपर कपड़ा लपेट कर हाथों को कपड़े के अन्दर डाल दो, जिससे हाथ और पांव न हिलें। और फिर चित लेटे रहो। इसको

शवासन कहते हैं। परन्तु इस आसन को अपनाओ या किसी अन्य आसन को, जिसे अपना लो उसे छोड़ो नहीं, सदा उसको अपनाये रक्खो। आसन लगाने के पश्चात पांच बार गायत्री मंत्र का जाप इस प्रकार करो कि तुम्हारे कान तुम्हारी आवाज सुन सकें। फिर आँख बन्द करके पांच बार इस प्रकार जाप करो कि होंठ हिलें आवाज सुनाई न दे। तब होंठ भी बन्द कर दो। पांच बार इस प्रकार जाप करो कि बन्द मुख के अन्दर जिह्वा हिले और कुछ भी न हो तब जिह्वा भी बन्द कर दो। कण्ठ से जाप करो फिर कण्ठ भी बन्द कर दो। दो आंखों के मध्य में, भौंओं के बीच, माथे में जो ध्यान है, जिसे भृकुटि कहते हैं, वहीं ध्यान करो। इस स्थान को प्रयाग भी कहते हैं। वहां इड़ा पिंगला और सुषुम्णा नाम की तीन नाड़ियां तीन नदियों के रूप में आकर मिलती हैं। इन नदियों को देखने का प्रयत्न करो। बार बार प्रयत्न करने से ये नदियाँ दृष्टिगोचर होंगी, एक विशाल नदी में मिलती हुई प्रतीत होंगी। उस नदी के किनारे बैठ जाओ, वहाँ बैठकर ऊपर देखो। भृकुटि से ऊपर, सिर के उस भाग में जो मस्तक से ऊपर है जिसे ललाट कहा जाता है, वहाँ ध्यान लगाने से एक चमकता हुआ आकाश दिखाई देगा। उससे भी ऊपर चमकता हुआ सूर्य दिखाई देगा, इससे भी आगे शीतल प्रकाश वाला चन्द्रलोक भी दिखाई देगा और यह सब कुछ करते हुए आश्चर्यजनक दृश्य दिखाई देंगे।

यह है ध्यान योग का सही और सीधा मार्ग। कहने को मैंने यह बात कुछ वाक्यों में कह दी परन्तु इस पर अभ्यास करने में पर्याप्त समय लगेगा। समय लगे तो घबराओ नहीं परिश्रम करते जाओ अन्ततः उस लक्ष्य पर पहुँचोगे अवश्य।

एक था बाग, उसमें बहुत अच्छे अच्छे आम लगे थे। बाग में बन्दर आते, आमों को खाने के लिए, बाग का माली उन्हें गुलेल मारता। बन्दर घायल होते, चिल्लाते फिर मार खाते, फिर भागते। बन्दरों को बूढ़ा सरदार था। उसने सब बन्दरों को बुलाके कहा, 'हम ऊँचे परिवार के लोग हैं, अम आमों के लिए बार बार मार खायें तो क्यों? अच्छी बात यह है कि हम अपने वृक्ष लगायें, उन पर आम लगें तो सुख से खायें। फिर कोई पत्थर माने वाला नहीं होगा, कोई रोकने वाला न होगा।' सब बन्दरों ने कहा यह तो ठीक बात है, सबने मिलकर आमों की गुठलियाँ पृथ्वी में दबा दीं। उनको पानी दिया और उनके सिरहाने बैठ गये। एक दिन बैठे रहे, दो दिन बैठे रहे, परन्तु थे तो बन्दर, तीसरे दिन उन्होंने पृथ्वी खोद के देखना आरम्भ कर दिया कि गुठलियों में आम लगे या नहीं।

देखो, इस प्रकार नहीं करना, धैर्य से काम लो परिश्रम करते जाओ। प्रयत्न करते जाओ, सफलता मिलेगी अवश्य, उसके पश्चात् भी न मिले तो निराश होकर नहीं बैठ जाओ। संसार में ऐसे भी लोग हैं, जो इस लक्ष्य पर पहुँचने में आपकी सहायता कर सकते हैं।

*('शंकर और दयानन्द' से, क्रमशः)*

## काव्यायन

### उद्धव-दशा और दिशा

❑जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'

दीन दशा देखि ब्रज-बालनि की उधव कौ
गरि गौ गुमान ज्ञान गौरव गुठाने से।
कहै रतनाकर न आए मुख बैन नैन
नीर भरि ल्याए भए सकुचि सिहाने से।।
सूखे से स्रमे से सकबके से सके से थके
भूले से भ्रमे से भभरे से भकुवाने से।
हौले से हले से हूल-हूले से हिये मैं हाय
हारे से हरे से रहे हेरत हिराने से।।

चुम रहौ ऊधौ सूधौ पथ मथुरा कौ गहौ
कहौ न कहानी जौ बिबिध कहि आए हौ।
कहै रतनाकर न बूझिहैं बुझाऐं हम
करत उपाय बृथा भारी भरमाए हौ।।
सरल स्वभाव मृदु जानि परौ ऊपर तैं
पर उर घाव करि लौन सौ लगाए हौ।
रावरी सुधाई मैं भरी है कुटिलाई कूटि
बात की मिठाई मैं लुनाई लाइ ल्याए हौ।।

आए हौ पठाए वा छतीसे छलिया के इतै
बीस बिसै ऊधौ बीरवावन कलाँच ह्वै।
कहै रतनाकर प्रपंच न पसारौ गाढ़े
बाढ़े पै रहौगे साढ़े बाइस ही जाँच ह्वै।
प्रेम अरु जोग मैं है जोग छठें-आठें परू यो
एक ह्वै रहैं क्यौं दोऊ हीरा अरु काँच ह्वै।
तीन गुन पाँच तत्त्व बहकि बतावत सो
जैहै तीन-तेरह तिहारी तीन-पाँच ह्वै।।

*(उद्धव-शतक से)*

### कोरोना क्रूर

❑डॉ. उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ट'

विश्व-नरता को ले चपेट में कोरोना-क्रूर,
कितनों को रोज ही, लपेटता कफन में।
बढ़ा जा रहा, निवाला बना, नर-नारियों को,
पीता हुआ अनगिनत, प्राण क्षण-क्षण में।
इष्ट हैं हमारे कालकूट-पायी महाकाल,
मृत्युजयी-मुण्डमालि, बसे कण-कण में।
धूल चटा देंगे उसे, शौर्य-अनुशासन से,
मूल मिटा देंगे, हुताशन लिये प्रण में।।

कमर कसे, कोरोना-कुत्सित विरुद्ध खड़े,
अड़े देशवासी, हारेगी ये महामारी ही।
चिकित्सक, नर्स, रक्षा, सफाई, मीडिया-कर्मी,
डटे अहर्निश, मरेगी बुरी-बीमारी ही।
शासन-प्रशासन सजग, ध्यान स्वच्छता का,
तिमिर हरेंगे घोर, द्वादश-तमारी ही।
चीन की कुचाल पर, विजय हमारी होगी,
विजय हमारी होगी, विजय हमारी ही।।

विकट विषाणु-ग्रस्त, प्यारे भाई-बहनों के,
उपचार में जो व्यस्त, उनको सलाम है।
तजी सुविधा की चाह, प्राण की न परवाह,
जिन कर्मवीरों ने, सलाम है, सलाम है।
पुलिस को, सेना को, सुरक्षा, मीडिया को तथा,
जन-सेवी व्यक्ति साथ, संस्था को सलाम है।
जनता के संयम को, ध्येय को सलाम और,
केन्द्र-राज्य-शासन के, श्रेय को सलाम है।।

*78, त्रिवेणी नगर द्वितीय, डालीगंज क्रासिंग, लखनऊ, लखनऊ*

### हेमंत ऋतु

❑पं. राघवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी 'ब्रजेश'

आतप तीखन सारद को गयो
तौर इते जिय और चढ़ै लग्यो।
द्वैक दिनान तैं सीरो समीर
चल्यो यह बीर अधीर बढ़ै लग्यो।
तीर न नीर को चाहत है चित
ऐसो कछू मन मोद मढ़ै लग्यो।
रूखन लागे सबै अँग अंग
ब्रजेश कहा यह ढंग कढ़ै लग्यो।।

निसि की लघुता दिन माँझ भई
दिन दीरघता निसि होने लगी।
हित हेरि हिमन्त हितू सों ब्रजेश
लखे सुखमा उर बोने लगी।
सुखदायनि सीरे समीरनि चन्द्र-
प्रभा यह धीरज धोने लगी।
अलि कोने लगी यह पावक ज्वाल हू
क्यों अपने गुन खोने लगी।।

*–ब्रजेश विनोद से*

### दुबारा कोरोना का जोर

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

आँकड़े मचा रहे हैं शोर।
दुबारा 'कोरोना' का जोर।।
ताप ग्रीषम कर कमजोर।
शीत ऋतु लाई नवल हिलोर।।
सुहाना सुखद समय सब ओर।
किन्तु 'कोरोना' मारे जोर।।
यद्यपि यह बीमारी गम्भीर।
किन्तु मत होवें मित्र! अधीर।।
न डरिये होते पीड़ित ठीक।
दवा है गुर्च बहुत ही नीक।।
मास्क से ढकिए मुख अरु नाक।
करों को धोयें ठीकम ठाक।।
नियम का पालन हो भरपूर।
सकेगा नहीं 'कोरोना' घूर।।
मिलाना अब हाथों को छोड़।
नमस्ते करें उभय कर जोड़।।
'कोरोना' होगा शीघ्र विनष्ट।
मिटेगा हर मानव का कष्ट।।
हो रही 'वैक्सीन' हित शोध।
बनेगी औषधि शीघ्र 'अबोध'।।

*–हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ*

### हर्ष–चतुष्पदी

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

समीक्षा के पीछे बुद्धिबल जरूरी है;
सस्ती लोक प्रियता के लिए, वाक्छल जरूरी है,
सही क्या है गलत क्या है, यहाँ सबकुछ चलता है-
स्वार्थ की सिद्धि के लिए कौशल जरूरी है।

लाकडाउन से तो सबक भला ही नजर आता है;
जान का रहना जरूरी है, वक्त यों भी गुजर जाता है,
अब मुझे कहीं जाने की क्या जरूरत है-
जहाज का पंछी उड़ता है फिर जहाज पर आता है।

*–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद*

## कालजयी काव्य

### आशा

❑जय शंकर 'प्रसाद'

उषा सुनहले तीर बरसती
जय-लक्ष्मी-सी उदित हुई;
उधर पराजित कालरात्रि भी
जल में अन्तर्निहित हुई।

वह विवर्ण मुख त्रस्त प्रकृति का
आज लगा हँसने फिर से;
वर्षा बीती, हुआ सृष्टि में
शरद-विकास नये सिर से।

नव कोमल आलोक बिखरता
हिम-संसृति पर भर अनुराग;
सित सरोज पर क्रीड़ा करता
जैसे मधुमय पिंग पराग।

धीरे-धीरे हिम-आच्छादन
हटने लगा धरातल से;
जगीं वनस्पतियाँ अलसाई
मुख धोती शीतल जल से।

नेत्र निमीलन करती मानो
प्रकृति प्रबुद्ध लगी होने;
जलधि लहरियों की अँगड़ाई
बार - बार जाती सोने।

सिन्धु सेज पर धरा वधू अब
तनिक संकुचित बैठी - सी;
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में
मान किये-सी ऐंठी-सी।

देखा मनु ने वह अतिरंजित
विजन विश्व का नव एकान्त;
जैसे कोलाहल सोया हो
हिम शीतल जड़ता-सा श्रान्त।

इन्द्रनील मणि महा चषक था
सोम रहित उलटा लटका;
आज पवन मृदु साँस ले रहा
जैसे बीत गया खटका।

वह विराट था हेम घोलता
नया रंग भरने को आज;
कौन? हुआ यह प्रश्न अचानक
और कुतूहल का था राज।

"विश्वदेव, सविता या पूषा
सोम, मरुत, चंचल पवमान;
वरुण आदि सब घूम रहे हैं
किसके शासन में अम्लान?

किसका था भ्रू-भंग प्रलय-सा
जिसमें ये सब विकल रहे;
अरे! प्रकृति के शक्ति-चिन्ह ये
फिर भी कितने निबल रहे!

विकल हुआ-सा काँप रहा था
सकल भूत चेतन समुदाय;
उनकी कैसी बुरी दशा थी
वे थे विवश और निरुपाय।

देव न थे हम और न ये हैं,
सब परिवर्तन के पुतले;
हाँ, कि गर्व-रथ में तुरंग-सा,
जितना जो चाहे जुत ले।"

"महानील इस परम व्योम में
अन्तरिक्ष में ज्योतिर्मान,
ग्रह, नक्षत्र और विद्युत्कण
किसा करते-से सन्धान!

छिप जाते हैं और निकलते
आकर्षण में खिंचे हुए;
तृण वीरुध लहलहे हो रहे
किसके रस से सिंचे हुए?

सिर नीचा कर किसकी सत्ता
सब करते स्वीकार यहाँ;
सदा मौन हो प्रवचन करते
जिसका, वह अस्तित्व कहाँ?

हे अनन्त रमणीय! कौन तुम?
यह मैं कैसे कह सकता!
कैसे हो? क्या हो? इसका तो
भार विचार न सह सकता।

हे विराट! हे विश्वदेव! तुम
कुछ हो, ऐसा होता भान-
मन्द गँभीर धीर स्वर संयुत
यही कर रहा सागर गान।"

*('कामायनी' महाकाव्य से)*

### परिचय

❑रमा आर्य 'रमा'

महक उठी है गांव की माटी, चहक उठा मेरा जीवन।
स्मृति के कहीं झरोखों से, झांक उठा शैशव बचपन।।
वर्तमान के आंगन में, कर अतीत का अभिनन्दन।
देखेगा कहीं कभी कोई जो, खोल समय का अवगुंठन।।
झूमे पतझड़ में भी तो, बन बासन्ती मन नन्दन।
महक उठेगा समिधा बनकर, यज्ञ कुंड का यह चन्दन।।
संघर्षों के चित्र पटल पर, समझौतों का यह अभिनय।
कहीं लिखे कुछ कहे कंठ से, बस वह ही अपना परिचय।।
मन 'ममता' के प्यालों में, 'काव्यांकुर' है स्फुटित हुआ।
'महकी माटी चहका जीवन', है धूप छांव ने जिसे छुआ।।
गौरव मान भारती ने है, 'भावातिरेक' से जो पाया।
देख रही है 'रमा सतसई', 'मन आंगन आकाश पराया'।।

*('मन आँगन आकाश पराया' से)*

*–417/10, निवाजगंज चौक, लखनऊ*

## अत्यावश्यक सूचना

कोरोना काल की प्रचण्ड विभीषिका में, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर मोदी जी के निर्देशानुसार लखनऊ में भी पूर्ण लॉकडाउन के कारण समस्त गतिविधियाँ रुक गयीं। जिस प्रेस में 'आर्य लोक वार्ता' का मुद्रण होता था, वह भी कण्टेनमेण्ट जोन में आ गया। फलतः 'आर्य लोक वार्ता' का अप्रैल २०२० से दिसम्बर २०२० तक कोई अंक प्रकाशित करना संभव नहीं हो पाया। आशा है, हमारे स्वाध्यायशील पाठक इस आपात् काल में हमारा सहयोग करेंगे। हम चीफ पोस्टमास्टर जनरल तथा भारतीय समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय से भी आशा करते हैं कि वे हमारी विवशता को समझेंगे। 'आर्य लोक वार्ता' का यह अंक उसी तारतम्य में पूर्ववत् प्रकाशित होता रहेगा। -**प्रधान सम्पादक**

### बाराबंकी-समाचार

## सेवा निवृत्त हुए आचार्य सत्य प्रकाश आर्य

वैदिक धर्म के प्रचारक श्री सत्यप्रकाश आर्य, बाराबंकी अपने कार्यकाल को सफलता एवं प्रतिष्ठा पूर्वक पूर्ण करते हुए पूर्व माध्यमिक विद्यालय, माधवपुर, देवा, जिला बाराबंकी से सेवानिवृत्त हुए। सभी औपचारिकताओं का निर्वाह करते हुए शिक्षाविभाग के अधिकारियों, शिक्षकों छात्रों द्वारा आपको भावभीनी विदाई दी गई। सन् १९८२ में बेसिक शिक्षा परिषद में शिक्षण कार्य हेतु आपका चयन हुआ था। इससे पूर्व आपने गैर सरकारी विद्यालयों में कई वर्ष शिक्षण कार्य किया था। दयानंद विद्यालय टाण्डा में चार वर्ष मुख्य अध्यापक के रूप में कार्य करने के बाद आपने गुरुकुल राजौर में एक वर्ष कार्य किया तदुपरान्त सरस्वती विद्या मंदिर, आजमगढ़ में एक वष सेवा की। इसके बाद सरस्वती विद्या मंदिर, निराला नगर, लखनऊ में आपका चयन हो गया। एक वर्ष कार्य करने के बाद आप स्थाई रूप से जिला परिषद द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय में कार्य करने लगे। सन् १९८२ से २०२० तक शिक्षण सेवा का शानदार रिकार्ड कायम कर आपने ३१.०३.२०२० को अवकाश प्राप्त किया।

श्री सत्य प्रकाश का जन्म ग्राम धनकवल, जिला अम्बेडकर नगर उ.प्र. में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री रामदेव जी था जो आचार्य ओजोमित्र शास्त्री के बड़े भ्राता थे। सत्य प्रकाश जी स्व.ओजोमित्र शास्त्री को सदैव 'पिताजी' कहा करते थे और पुत्रवत् उनकी आज्ञाओं का पालन करते थे। शास्त्री जी ने पुत्रवत् सत्यप्रकाश जी को अपना स्नेह-संरक्षण प्रदान किया।

प्रारंभ से ही सत्य प्रकाश जी का मुख्य उद्देश्य आर्य समाज का प्रचार कार्य रहा; जीविकोपार्जन का उपक्रम गौण। किसी शिक्षा संस्थान में वैतनिक कार्य करते हुए आर्य समाज का प्रचार कार्य, वह भी भजनोपदेशक के रूप में अत्यंत दुरूह कार्य है। उपदेशक के रूप में कार्य करना अपेक्षाकृत सरल है किन्तु भजनोपदेशक का दायित्व निर्वाह किसी तपश्चर्या से कम नहीं है। सत्यप्रकाश जी ने ऐसी ही तपस्या की है। निजी ढोलकवादक के साथ सत्यप्रकाश जी जहाँ भी गये, अपना गहरा प्रभाव छोड़ने में सफल रहे। उत्तरी भारत का कदाचित् ही कोई ऐसा कोना होगा, जहाँ सत्य प्रकाश जी के भजनों के दीवाने न हों, श्री नंदलाल, कवि इन्द्र, कुँवर महिपाल सिंह इत्यादि अपने समय के श्रेष्ठ भजनोपदेशकों की परम्परा को जीवंत रखते हुए अपार लोकप्रियता अर्जित की। साथ ही, आचार्य ओजोमित्र शास्त्री के सान्निध्य में रहकर वैदिक संस्कारों को सम्पन्न कराने में दक्षता प्राप्त की। सरस्वती विद्या मंदिर, लखनऊ में अध्यापन काल से ही 'आचार्य जी' कहे जाते थे और बाद में संस्कारों के नैपुण्य ने आचार्य उपाधि को सार्थक साबित कर दिया। सुरीली और ओजस्वी वाणी में लोकप्रिय भजनों की धुनों को आत्मसात् करते हुए मनोरंजन पूर्ण टिप्पणियों के साथ प्रचार कार्य से आर्य समाज के गौरव की आपने वृद्धि की। बाराबंकी-आवास विकास कालोनी में सुंदर भवन की व्यवस्था की, बच्चों को शिक्षित करते हुए उन्हें राजकीय सेवा में संलग्न कराना तथा पुत्रियों को सुयोग्य बनाना तथा उनके वैवाहिक जीवन को भव्यता प्रदान करने का सत्य प्रकाश जी का कौशल कम सराहनीय नहीं है।

इतना सब होते हुए भी 'आर्य लोक वार्ता' से सत्य प्रकाश जी का आत्मीय संबन्ध प्रारंभ से ही बना रहा। 'आर्य लोक वार्ता' द्वारा संचालित समारोहों में उपस्थित होना, उन्हें सफल बनाना तथा आर्थिक सहयोग निरन्तर प्रतिवर्ष प्रदान करते रहना सत्य प्रकाश जी का सदा स्वभाव रहा है। *(प्रधान सम्पादक)*

### लखनऊ-समाचार

## सावित्री स्मृति

श्रीमती सावित्री अग्रवाल (पत्नी डॉ.मोहनलाल अग्रवाल, से.नि.अपर निदेशक, उ.प्र.गन्ना शोध परिषद शाहजहाँपुर एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद व उपप्रधान आर्य समाज लालबाग, लखनऊ) का स्वर्गवास मंगलवार, जुलाई १४, २०२० को अपराह्न २ बजे हो गया। अंत्येष्टि जुलाई १५ को बैंसाकुण्ड शवदाह स्थल पर की गई जिसमें कनिष्ठ पुत्र श्री मनीष कुमार अग्रवाल, सहायक गन्ना प्रबंधक, त्रिवेणी शुगर वर्क्स, खतौली, जनपद-मुजफ्फरनगर एवं वरिष्ठ पुत्र श्री मनोज कुमार अग्रवाल, मुजफ्फरनगर व पारिवारिक जन तथा गण्यमान व्यक्ति उपस्थित थे। शान्तियज्ञ शुक्रवार, जुलाई २० को निवास स्थल ए-७६६, इन्दिरानगर, लखनऊ पर पारिवारिक जनों एवं गण्यमान व्यक्तियों की उपस्थिति में श्री नवनीत निगम, प्रधान, जिला प्रतिनिधि सभा, लखनऊ द्वारा सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर आचार्य डॉ.वेद प्रकाश आर्य, डॉ.निष्ठा विद्यालंकार, श्री महेश चन्द्र द्विवेदी (अध्यक्ष, भा.प्र.परिषद), साधुशरण वर्मा, साहित्यकार, धुरेन्द्र स्वरूप विसारिया 'प्रभंजन', श्रीमती कान्ति कुमार एवं अक्षय भाई के साथ सभी ने यज्ञ उपरान्त स्व.सावित्री अग्रवाल को श्रद्धांजलि अर्पित कर अग्रवाल परिवार को धैर्य धारण हेतु संवेदना व्यक्त की। अग्रवाल परिवार की ओर से आर्य विद्वानों एवं आर्य समाज तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं हेतु यथोचित दान दिया गया।

### लखनऊ-समाचार

## जिला आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक निर्वाचन

दिनांक २०.१२.२०२० को सर्वसम्मति से जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के लिए निम्नलिखित पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ-

| | |
|---|---|
| श्री अनिल आहूजा | संरक्षक |
| श्रीमती अमिताविरमानी | संरक्षिका |
| आचार्य श्री नवनीत | प्रधान |
| श्रीमती कान्ति कुमार | उपप्रधान |
| श्री मनीष आर्य | उपप्रधान |
| डॉ वी पी आर्य | उपप्रधान |
| श्री रण सिंह | उपप्रधान |
| श्री प्रत्यूष रत्न पाण्डेय | उपप्रधान |
| श्री प्रबोध सागर आर्य | म.ग्री |
| श्री आनन्द चौधरी | संगठन म.गी |
| श्रीमती आशा अग्रवाल | उपम.गी |
| श्री यतेन्द्र सिंह | उपम.गी |
| श्री रामेन्द्र देव वर्मा | उपम.गी |
| श्री अजय श्रीवास्तव | उपम.गी |
| श्री कृष्णानन्द आर्य | उपम.गी |
| श्री राजीव बत्रा | कोषाध्यक्ष |
| श्री संतोष मिश्रा | सह कोषाध्यक्ष |
| श्री प्रेमशंकर मौर्य | पुस्तकालयाध्यक्ष |
| श्री के प्रसाद | संप्रेक्षक |
| श्री सर्वमित्र शास्त्री | अधिष्ठाता आ.वी.दल |

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए प्रतिनिधि श्री मोहनलाल अग्रवाल, श्री रमेश चन्द्र आर्य

## पुण्य-स्मृति

## माता कमला श्रीवास्तव

सरल शान्त स्वभाववाली माता श्रीमती कमला श्रीवास्तव, क्लाइट रोड, निकट जागरण चौराहा, लखनऊ का देहावसान दि. ११ नवम्बर २०२० को हो गया। आप लखनऊ विश्वविद्यालय के दिवंगत प्रोफेसर श्री हरगोविन्द श्रीवास्तव (अर्थशास्त्र विभाग) की पत्नी थीं। पति की मृत्यु के उपरान्त आपने दो दशक तक परिवार को संरक्षण प्रदान किया। आप अपने पीछे पुत्र श्री अमलोक श्रीवास्तव तथा चार पुत्रियाँ-छाया, किरन, कल्पना और कीर्ति को छोड़ गई हैं।

२८.११.२० को आपके आवास पर वैदिक यज्ञ आचार्य डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने सम्पन्न कराया। बड़ी संख्या में पारिवारिक जनों ने यज्ञ में भाग लिया और अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। कार्यक्रम का संयोजन श्री आदित्य प्रकाश श्रीवास्तव (शाखा प्रबंधक,पंजाब नेशनल बैंक) ने किया।

## आर्य समाज इन्दिरा नगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज इंदिरा नगर, लखनऊ का वार्षिक उत्सव आर्य समाज मंदिर, वैशाली इन्क्लेव, इन्दिरा नगर में समारोह पूर्वक १९ तथा २० दिसम्बर २०२०, शनिवार, रविवार को मनाया गया। इस अवसर पर जिन विद्वानों को आमंत्रित किया गया उनके नाम हैं- पं.सुरेश चन्द्र जोशी, श्रीमती रुक्मिणी आर्य (बाराबंकी), आचार्या डॉ.निष्ठा विद्यालंकार, लखनऊ, सुश्री महिमा आर्य, पाणिनि महाविद्यालय। प्रथम दिन के कार्यक्रम संयोजक थे श्री रामेन्द्र देव वर्मा तथा द्वितीय दिवस के संयोजक थे श्री डोरी लाल आर्य। प्रतिदिन प्रातः ८ से ११ बजे तक यज्ञ, भजनोपदेश तथा आगत विद्वानों के प्रवचन होते रहे, जिसे मनोयोगपूर्वक सुना गया। उत्सव को जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य नवनीत तथा मंत्री श्री प्रबोध सागर जौहरी इत्यादि का पूरा सहयोग सुलभ रहा। समारोह आर्य समाज इन्दिरा नगर की प्रधान आर्य विदुषी श्रीमती कान्ति जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर संस्कारों के महत्व पर पुस्तक का विमोचन किया गया। प्रत्येक दिन अल्पाहार की सुंदर व्यवस्था की गई। समाज के कोषाध्यक्ष श्री अभय मुनि का व्यवस्था में उल्लेखनीय सहयोग रहा।

कड़ाकेदार ठंड में कोरोना के नियमों का पूर्ण पालन करते हुए उत्सव का सफल आयोजन किया गया।

### सीतापुर समाचार

## आर्य समाज सीतापुर का सूर्य अस्त

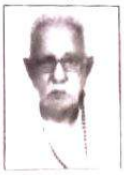



सीतापुर, ३०.१२.२०२०। २०२० जाते जाते गहरा आघात दे गया। आर्य समाज सीतापुर के जनप्रिय सेवाव्रती आर्य नेता श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी' का ८७ वर्ष की वय में निधन हो गया। आप अपने पीछे यतीन्द्र, योगेन्द्र दो पुत्रों और मैत्रेयी सहित तीन पुत्रियों का परिवार छोड़ गये हैं। आर्य समाज के सत्यनिष्ठ सेनानी 'वीरजी' आर्यत्व की जीती जागती मिसाल थे। वर्षों तक वे आर्य वीर दल सीतापुर के नगर नायक रहे। उनका सीतापुर के जनमानस पर गहरा प्रभाव था। सभी उनका सम्मान करते थे। 'आर्य लोक वार्ता' के वे सुदृढ़ स्तम्भ थे और उन्होंने लगभग ७० सदस्य जनपद में तैयार कर दिये थे।

श्री वीरजी के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करने हेतु बड़ी संख्या में ०१.०१.२०२१ को आर्य समाज मंदिर, आर्य नगर, सीतापुर में श्रद्धालु एकत्र हुए। चौधरी रणवीर सिंह, प्रधान आर्य समाज, सीतापुर, श्री अजीत आर्य, आर्य समाज लहरपुर(?), डॉ. सतीश वर्मा, डॉ.सदानन्द आर्य समाज, महोली, नेतराम आर्य शास्त्री सहित विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि गण शोकसभा में मौजूद थे। वीरजी के निधन पर डॉ.वेद प्रकाश आर्य (प्रधान सम्पादक आर्य लोक वार्ता) ने शोक संदेश में कहा- सीतापुर आर्य समाज का 'सूर्य' अस्त हो गया है। *(सं.सू. शचीन्द्र मिश्र)*

## सीतापुर में आर्य लोक वार्ता के प्रतिनिधि होंगे श्री शचीन्द्र शास्त्री

वीरजी के निधनोपरान्त सीतापुर में 'आर्य लोक वार्ता' के प्रतिनिधि होंगे श्री शचीन्द्र शास्त्री। शास्त्री जी की योग्यता और सद्व्यवहार से सभी सुपरिचित हैं। सीतापुर जनपद के सभी 'आर्य लोक वार्ता' के सदस्यगण श्री शास्त्री जी से सम्पर्क स्थापित करें (चलभाष ८४७००२६२८८) और उन्हें पूरा सहयोग प्रदान करें। वर्ष २०२१ हेतु सहयोग राशि भी श्री शास्त्री जी के पास जमा कर दें। धन्यवाद। *डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक*

## गाँधी जी को पत्नीशोक

सीतापुर में गाँधी जी के नाम से लोकप्रिय श्री गुरुप्रसाद मिश्र (सेवानिवृत्त विज्ञान प्रवक्ता) की धर्मपत्नी श्रीमती राजकुमारी मिश्रा (७३) का हृदयाघात से आकस्मिक निधन हो गया। नारी कार्डियालाजी, लखनऊ से वांछित चिकित्सा के उपरान्त वे अपने आवास विजयलक्ष्मी नगर, सीतापुर स्वस्थ होकर आ गई थीं, किन्तु कदाचित् उनका संसार में अधिक दिन रहना ईश्वर को मंजूर नहीं था, और दि. २८.०५.२०२० को उनकी संसार-यात्रा पर पूर्ण विराम लग गया। उन्होंने संसार के साथ ही अपने जीवन साथी श्री गाँधी जी का ५७ वर्ष पुराना साथ छोड़ दिया औरदुनिया को अलविदा कह दिया। स्व.श्रीमती मिश्र का जन्म फर्रुखाबाद निवासी पिता स्व.राम अवतार मिश्र के घर में हुआ था। अपने सफल वैवाहिक जीवन में सम्पूर्ण परिवार को उन्होंने निश्चित दिशा प्रदान की। वे अपने पीछे चार पुत्रों और दो पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

### लखनऊ-समाचार

## 'मन आंगन आकाश पराया' काव्य का विमोचन

१९.११.२०२०। अपनी सशक्त लेखनी से जनजीवन को वाणी प्रदान करने वाली जनप्रिय कवयित्री श्रीमती



रामा आर्य 'रमा' की आठवीं कृति 'मन आंगन आकाश पराया' का विमोचन आर्य समाज, लाजपतनगर, चौक के सभाकक्ष में सम्पन्न हुआ। मंच पर विराजमान थे- श्री दयानन्द जड़िया 'अबोध', बालचन्द्र तिवारी (मुख्य वक्ता), तेजेन्द्र प्रकाश हवेलिया (अध्यक्ष), डॉ.वेद प्रकाश आर्य एवं कवयित्री श्रीमती रामा आर्य 'रमा'। इस अवसर पर प्रख्यात साहित्यसेवी श्री दयानन्द जड़िया 'अबोध' को 'सागरिका सम्मान' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन कवि-कथाकार श्रीश रत्न पाण्डेय ने किया तथा संयोजक थे प्रत्यूष रत्न पाण्डेय। विशिष्ट अतिथि श्री अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक' ने काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डाला एवं साहित्य भूषण श्री रंगनाथ मिश्र 'सत्य' ने रमा जी की प्रेरक काव्यरचना पर बधाई दी।

श्रीमती रामा आर्य 'रमा' ने कवयित्री स्व.आभा मिश्र का पुण्य स्मरण किया; जिनको यह काव्य समर्पित है तथा अपनी रचनाओं की पृष्ठभूमि से परिचित कराया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने कहा- रमा जी साहित्यिक क्षेत्र में नारी संवेदनाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। अनेक ग्रंथों के प्रणेता पंडित हरिओम शर्मा ने कहा- रमा जी का काव्य देश के सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक है। भाभा अणुशक्ति केन्द्र मुम्बई के भाषा अधिकारी पीयूष रत्न पाण्डेय ने स्वरचित 'खद्योत' काव्य पर एक वक्तव्य दिया।

# आर्य जगत की विभूतियों के जन्म दिवस

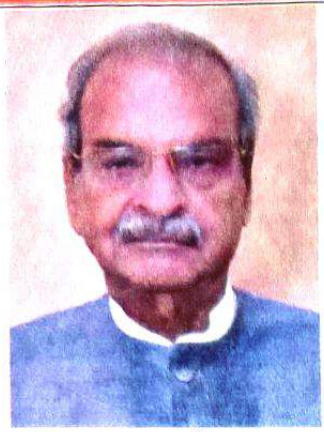



## आनन्द कुमार आर्य : 8 नवम्बर

अंशज मिश्रीलाल के, सुसंस्कारित आर्य।
योग्य पिता के योग्य सुत, यज्ञनिष्ठ शुभकार्य।
आर्य कर्मयोगी सफल, श्री कुमार आनन्द।
शुचि सत्यार्थ प्रकाश से, बाँटे परमानन्द।

दयानन्द ऋषि-भाव से, तन मन ओतप्रोत।
टाण्डा नगरी को दिए, शिक्षा के नवस्रोत।
डी.ए.वी. के नाम से, खोले शैक्षिक-केन्द्र।
टाण्डा में नवज्योति सम, हैं 'आनन्द' नरेन्द्र।

अभिनन्दन-शुभकामना, अर्पित शत-शत बार।
देखें जीवन-शरद शत, आर्यानन्द कुमार।
प्रभु से सादर प्रार्थना, रहें स्वस्थ सानन्द।
ज्ञानज्योति अक्षुण्ण रखे, श्री कुमार आनन्द।

*–गौरीशंकर वैश्य विनम्र*

आर्य समाज टाण्डा के प्रधान; मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज एवं डी.ए.वी.एकेडमी के प्रबंधक; सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कार्यकारी प्रधान कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य का जन्मदिवस इस वर्ष हेस्टिमाया आपार्टमेंट गोमती नगर विस्तार लखनऊ में मनाया गया। वैदिक आचार्य डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने यज्ञ सम्पन्न कराया; जिसमें श्री मनीष कुमार आर्य, श्रीमती श्वेता तथा बालवीर सार्थक और बाल वीरांगना मान्यता, श्रीमती मीना आर्य ने मुख्य रूप से भाग लिया। इस अवसर पर डॉ.प्रशिषा, प्रधानाचार्या मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कालेज, टाण्डा ने आनन्द बाबू के दीर्घायुष्य और उत्तम स्वास्थ्य की कामना की।

## कृष्णस्वरूप चौधरी : 26 जुलाई



विनीत खण्ड-२, गोमती नगर, लखनऊ, २६.०७.२०२०। सीतापुर में चौधरी परिवार की प्रतिष्ठा एवं धाक आज भी कायम है, अपने समय के विख्यात शायर स्व.रामस्वरूप चौधरी 'जब्त सीतापुरी' के सुपुत्र श्री कृष्णस्वरूप चौधरी ने अपना ६०वाँ जन्मदिवस वैदिक परम्पराओं के अनुरूप मनाया। आपकी सहधर्मिणी श्रीमती सुधा चौधरी, आर्य कन्या महाविद्यालय, हरदोई की पूर्व प्राचार्या, ने आयोजन को गरिमापूर्ण बनाने की पूरी कोशिश की। कोरोना काल की कठिनाइयों के बीच यह आयोजन संबन्धित पक्षों को हवा के एक खुशगवार झोंके की तरह बड़ी राहत दे गया। कार्यक्रम का समापन पारिवारिक प्रीतिभोज के साथ हुआ। वैदिक यज्ञ का आचार्यत्व डॉ.वेद प्रकाश आर्य (प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता) ने पूर्ण वैदिक नियमों का परिपालन करते हुए यज्ञ सम्पन्न कराया। यज्ञोपरान्त सुपुत्री श्रीमती साधना मोहन ने अपने पिता को विश्व में महानतम बताया जिसका उनके पति पत्रकार श्री विश्व मोहन (बलरामपुर) ने अनुमोदन किया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने चौधरी साहब को एक बड़ी प्रेरक शक्ति के रूप में व्याख्यायित किया।

## जन्मदिवस पर काव्य भेंट



"डॉ.चन्द्र विजय पाण्डेय (डॉ.सी.वी.पाण्डेय) जितने योग्यतम चिकित्सक और सर्जन हैं, उतने ही कुशल व्याख्याता और चिन्तक हैं; इन सबसे ऊपर उनके पास मानवीय संवेदनाओं की अकूत सम्पत्ति है।" इन शब्दों के साथ आर्य लोक वार्ता के सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने डॉ.पाण्डेय के जन्मदिवस पर बुधवार दिनांक १६ दिसम्बर २०२० को शुभकामनाएँ व्यक्त कीं और सर्वोदय नगर लखनऊ स्थित उनके चिकित्सालय पर जाकर अपनी नवप्रकाशित काव्यकृति 'धधकते पृष्ठ' भेंट की। इस अवसर पर अमितवीर त्रिपाठी, श्रीमती निमिषा वाजपेयी, श्रीमती शशि त्रिपाठी की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

## ठाकुर विक्रम सिंह : 19 सितम्बर

साधना संलग्न जीवन ज्ञेय जिनका,
वेद धर्म प्रसार ही है प्रेय जिनका।
राष्ट्र का निर्माण सक्षम ध्येय जिनका,
विश्व का कल्याण अनुपम श्रेय जिनका।।

ढोंग के दुर्गम गढ़ों को नष्ट करते,
पीड़ितों दुखिया जनों के ताप हरते।
पोंछते, सकरुण दृगों के अश्रु झरते,
लोक सेवा हेतु धन साधन वितरते।।

देश में विश्वास की नव किरण लेकर,
प्रगति पथ पर बढ़ रहे अविराम सत्वर।
कीर्ति के हों प्रस्फुटित नित नये अंकुर,
जयति जय जय वीर विक्रम सिंह ठाकुर।।

*–डॉ वेद प्रकाश आर्य*

कोरोना काल की सावधानियों का पालन करते हुए राष्ट्रीय निर्माण पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह का जन्मदिवस नई दिल्ली में उनके आवास पर वैदिक यज्ञ के साथ मनाया गया। देश विदेश से शुभकामना और बधाइयों का ताँता लगा रहा। कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य एवं आर्य लोक वार्ता सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने अपने बधाई संदेश में ठाकुर साहब के दीर्घ आयुष्य एवं यशस्वी जीवन की कामनाएँ व्यक्त कीं।

## पाल प्रवीण : 20 मई



योगाश्रम, अलीगंज, लखनऊ, २०.०५.२०२०। योगनिष्ठ श्री पाल प्रवीण का जन्म दिवस लाकडाउन के अन्तर्गत निर्धारित नियमों का पालन करते हुए मनाया गया। मात्र पारिवारिक जनों ने यज्ञ में भाग लिया तथा पाल प्रवीण जी के दीर्घायुष्य और सुंदर स्वास्थ्य की कामनाएँ कीं। डॉ.वेद प्रकाश आर्य (प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता) ने यज्ञ सम्पन्न कराया। इस अवसर पर शताधिक शुभकामना संदेश प्राप्त हुए। सभी के प्रति पाल प्रवीण जी ने हार्दिक आभार जताया।

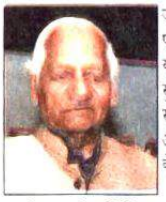

बताते चलें कि श्री पाल प्रवीण ने कई अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों में भाग लिया तथा अपने विचार भी वहाँ व्यक्त किये हैं। पंडित रामलाल आर्य, श्रीमती शोभा सिन्हा इत्यादि विदेशों में रहने वाले अनेक व्यक्ति पाल प्रवीण जी के सम्पर्क में रहते हैं। दिल्ली, उत्तराखंड, राजस्थान इत्यादि कई प्रान्तों में श्री पाल प्रवीण के प्रशंसकों और श्रद्धालुओं की उपस्थिति पायी जाती है।

## स्मृति-सुरभि : स्व.विजयलक्ष्मी रस्तोगी



आर्य लोक वार्ता के सुपरिचित कवि श्री बाँके बिहारी 'हर्ष' की धर्मपत्नी स्वर्गीया विजयलक्ष्मी रस्तोगी जी का स्मृति दिवस प्रतिवर्ष ८ जून को अवधपुरी, फैजाबाद में मनाया जाता है। विजयलक्ष्मी जी का जन्म १३ अगस्त १६४२ को बाँदा में हुआ था और ८ जून २०१५ को ७३ वर्ष की आयु में परलोक गमन हुआ। आप अपने पीछे पति, पुत्रों, पुत्र-वधुओं, पौत्रों-पौत्रियों का भरापूरा परिवार शोकाकुल छोड़ गयीं। आप उत्तम धार्मिक विचारों से ओतप्रोत एवं व्यवहार कुशल गृहणी थीं। आपकी मधुर मातृत्व स्मृतियाँ पारिवारिक जनों के हृदयों में हमेशा अंकित रहेंगी। समस्त पारिवारिक जनों ने आपकी पुण्य तिथि पर अपने श्रद्धा सुमन स्मृति चरणों में अर्पित किये। श्रद्धासुमन अर्पित करने वालों में मुख्य हैं- बाँके बिहारी 'हर्ष' (पति), प्रवीण, नवनीत, पुनीत, पावन (पुत्र), श्रीमती अनुपमा, रेनू, शिप्रा, पूजा (पुत्रवधू), सजल, प्रांजल, राघव, सात्विक, कौस्तुभ (पौत्र) तथा प्रियांशी, अनुकृति, गौरांशी, सिद्धी (पौत्रियां)। वर्तमान में श्री पुनीत जी की अभिरुचि आर्य लोक वार्ता तथा आर्य विचारों के प्रति विशेष परिलक्षित हो रही है, जो कि एक कल्याणकारी शुभ लक्षण है।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निर्देशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
**डॉ० वेद प्रकाश आर्य**
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक
**आलोक वीर आर्य**
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
**अमित वीर त्रिपाठी**
9651333679

संवाद प्रमुख
**गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'**
9956087585

कार्यालय प्रमुख
**श्रीमती सरला आर्य**
9450500138

विशेष कार्याधिकारी
**श्रीमती निमिषा वाजपेयी**
7310119999

प्रचार प्रमुख
**श्री प्रेम चन्द शर्मा**
8799521631

नवोन्मेष
**श्री कृष्णा जी**

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com


### सहयोग राशि

| | | |
|---|---|---|
| सामान्य सदस्य | – | 100 रु. वार्षिक |
| सक्रिय सदस्य | – | 200 रु. वार्षिक |
| विशिष्ट सदस्य | – | 500 रु. वार्षिक |
| होता सदस्य | – | 2,000 रु. वार्षिक |
| संरक्षक | – | 20,000 रु. |
| प्रतिष्ठापक | – | 75,000 रु. |

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं.–46900 1000 00651
खाते का प्रकार–बचत खाता


प्रतिष्ठापक
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार

संरक्षक
डॉ.भानु प्रकाश आर्य, लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ


मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा वेदाधिष्ठान 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

**ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता घर-घर में**